Urban and Rural Development (Thirteenth Lok Sabha) on the Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana (PMGSY).

STATEMENT BY MINISTER AND DISCUSSION IN CONNECTION WITH TERRORIST ATTACK ON PARLIAMENT HOUSE ON THE 13th DECEMBER, 2001

DR. (SHRIMATI) NAJMA HEPTULLA (Maharashtra): Sir, I just want to make a submission before you that while we pay our greatest tributes and homage to those who have laid down their lives for defending Parliament, yesterday one more of your security personnel also died, and the day before yesterday Shri Matbar Singh Negi also died. Sir, I would like to inform the House that the Chief Minister of Rajasthan, as he has written to you, has declared to the widow and the dependents of Shri J.P. Yadav an immediate relief of rupees one lakh, and 25 bighas of fertile land or an MIG flat or a relief of rupees four lakhs, a relief of Rs. 1.20 lakhs to his parents so that they can earn an interest of Rs. 1,000/- per month regularly, a job in the State Government to the widow or the dependent, free education and scholarship to the dependents, agricultural electricity connection on a priority basis to the widow or the dependents, and free bus passes of Rajasthan State Transport to the widow and dependents. Sir, you have given Rs. 50,000 from your discretionary fund to all who died. The Rajya Sabha has given Rs. 8,00,000/- to every one who died from the Rajya Sabha Watch and Ward. Since Shri Matbar Singh Negi belonged to Uttaranchal Pradesh, as has been done by the Chief Minister of Rajasthan, I hope the same would be done by the Chief Minister of Uttaranchal Pradesh also because Shri Matbar Singh Negi laid down his life for saving us. Another thing is, Sir, yesterday, while I was in the Chair, hon. Member, Shri Sangh Priya Gautam, came to me and said that he wanted to give his one month's salary towards this cause. I told him that I was also going to announce that I would also be giving my one month's salary. When there were Bombay bomb blasts, I remember, Sir, that the Rajya Sabha Members had given money *...(Interruptions)...* बात तो सुन लीजिए। अहलुवालिया जी, मुझे मालूम है कि आपने मुंबई रिलीफ फंड के लिए भी पैसे दिए हैं। मैं खाली रिकॉर्ड पर यह बात लाना चाहती हूं। The amount is not much, but, ultimately, what matters is the sentiment which we want to show to the country through this. We are obliged to the people who have laid down their lives fighting against terrorism. Terrorism has different manifestations. It sometimes comes in the form of religion, sometimes in the form of language and sometimes in

some other form. We should resolve to fight against terrorism. I have been taking up these issues internationally, wherever I have gone. And I want to put on record today that the country is united as one to defend our democracy. We have to fight terrorism at every level. This is the only submission which I want to make. Our heart goes out to the families of those, who have laid down their lives. They not only saved our lives, but have also saved our democracy, which is most important to us all. Thank you, Sir. ...*(Interruptions)*...

SMT. SAROJ DUBEY (Bihar): Sir, I associate myself with it. ...*(Interruptions)*...

SHRI RAJU PARMAR (Gujarat): Sir, I associate myself with it. ...*(Interruptions)*...

SHRI VIJAY SINGH YADAV (Bihar): Sir, I associate myself with it.

MR. CHAIRMAN: Shri Dina Nath Mishra. ...*(Interruptions)*...

SHRI SATISH PRADHAN (Maharashtra) : Sir, on behalf of the Shiv Sena Party, I want to say that we have already sent our cheques to the Shiv Sena Leader. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: All the hon. Members are doing that. ...*(Interruptions)*... Hon. Members are doing that..*(Interruptions)*...

SHRI SATISH PRADHAN: We have already sent our cheques to our Shiv Sena Party. ...*(Interruptions)*... From there they will go to the..*(Interruptions)*...

SHRI GOPALSINH G. SOLANKI (Gujarat) : Some relief should also be given to those who were injured. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: That is all right. Now, Shri Dina Nath Mishra.

श्री दीनानाथ मिश्र (उत्तर प्रदेश) : सभापति महोदय, इस चर्चा को चालू करते हुए मैं इस सदन की पूरी भावना को ध्यान में रखकर अपनी तरफ से और मित्रों की तरफ से एक महीने का वेतन देने की जो बात कही गयी है उसका समर्थन करता हूं। कल चर्चा के समय मैं यह कह रहा था कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान इन दो देशों में आतंकवाद के इतने बड़े-बड़े और बड़ी संख्या में कारखाने चलते रहे हैं कि आज दुनिया का 80 प्रतिशत आतंकवाद का ऑरिजन इन इलाकों से है। मैं कह रहा था कि कम से कम 20 देशों के आतंकवादी इन इलाकों में प्रशिक्षण ले रहे हैं। कम से कम 50 देशों में इनका तंत्र बन गया है। पूर्व प्रधान मंत्री नरसिंह राव जी के जमाने में भारत सरकार ने दुनियां के लगभग सभी महत्वपूर्ण देशों को यह जानकारी दी थी नक्शों से, फोटो से, आंकड़ों से, फिल्मों से कि किस तरह पाकिस्तान आतंकवाद को प्रशिक्षित कर रहा

है, आतंकवाद फैला रहा है और किस तरह भारत उसका शिकार हो रहा है। हम उम्मीद करते थे कि अमेरिका इस बात को समझेगा लेकिन अमेरिका के जो हित हैं वह दूसरे थे। मैंने कल एक पुस्तक का हवाला दिया था। वह पुस्तक आज मेरे पास है : Osama Bin Laden: The man who declared war on America इस एक पुस्तक में ब्रोडेंस्की ने इतने प्रमाण इकट्ठे किए हैं कि यह अपने आप साबित है कि पाकिस्तान एक 'रोग' स्टेट है, पाकिस्तान एक टेररिस्ट स्टेट है, वह टेररिज्म स्पांसर करता है, उसके टेररिज्म से न सिर्फ भारत बल्कि बहुत से अन्य देश चेचन्या, सोमालिया, सूडान जैसे दर्जनों देशों में आतंकवादी गतिविधियां चलती रही हैं, उसकी जड़ में पाकिस्तान रहा है। पाकिस्तान में अफगानिस्तान के तालिबानों को पाला-पोसा। सच बात तो यह है कि तालिबान के रूप में पाकिस्तान का वर्चस्व वहां पर रहा है। मैं एक और पुस्तक उद्धृत करना चाहता हूं। पाकिस्तान के एक बहुत प्रसिद्ध और सोच-परख से काम करने वाले पत्रकार ने यह लिखा है। उनका नाम है अहमद रशीद। Taliban, Islam, Oil and the new great games in Central Asia इस पुस्तक को कोई अगर पूरा देख ले तो इसमें कोई संदेह किसी को नहीं बचेगा कि तालिबान को खड़ा किया पाकिस्तान ने, आई.एस.आई. ने किया है। एक-एक जानकारी, ऐसी जानकारी कि काबुल में तालिबान सरकार को वेतन देने के लिए महीने दर महीने इस्लामाबाद के खजाने से पैसा जाता था और उसका भयानक परिणाम पाकिस्तान के खिलाफ ही गया। यह सारा इसमें ब्यौरा है।

सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि अमेरिका के हित जुदा हैं। वह आज हमसे संयम बरतने की बात कर रहा है, लेकिन तालिबान को खड़ा करने में उसकी भूमिका रही है। उसके बाद की भी भूमिका वही रही है जब कोल्ड वार के दिन खत्म हो गए। उसकी रूस के साथ तनातनी थी और वह उससे निपट रहा था। उसके बाद के दस साल में भी अमेरिका की भूमिका कैसी रही है, इस पुस्तक में इसका ब्यौरा है। इसका मूल कारण तेल है। कल के इकनामिक टाइम्स में एक कवर स्टोरी है, एडिक्टेड टू ऑयल। उसमें यह लिखा है कि गल्फ के देशों में, अरब के देशों में अमेरिका के जो हित हैं उसी कारण अमेरिका वहां लड़ रहा है? इसका एक कारण ऑयल है और उस ऑयल के एडिक्शन से जब तक निजात नहीं होगी, इस टैंगल से छुटकारा नहीं होगा। आज भी अमेरिका जो कुछ कर रहा है उसके पीछे भी ऑयल है। 1989 से लेकर बाद के दौर में अमेरिका के हित उस तरह के नहीं थे, लेकिन ऑयल के कारण, ऑयल कम्पनियों के कारण, ऑयल कम्पनियों के माध्यम से उसने तालिबानियों से संबंध बनाये रखा और आतंकवाद को पालता-पोसता रहा।

आज वह जो तालिबान और ओसामा बिन लादेन के पीछे पड़ा हुआ है, उसको खड़ा भी उन्होंने किया, बैंड के जेहाद को खड़ा करने में और संसार भर को उसको झेलने के लिए मजबूर करने में अमेरिका की बड़ी भूमिका रही है। अमेरिका आज जो संयम की बात कर रहा है, सच तो यह है कि अमेरिका के आज के इस कथन के बारे में, इस उपदेश के बारे भी ईमानदारी से विश्वास नहीं किया जा सकता। उसके राष्ट्रहित आज यह कहते हैं कि वह इस्लामिक देशों की सरकारों पर कब्जा रखते हुए वहां की जनता की चिंता न करते हुए और जो भी इस्लामिक देशों की सरकारें चाहती हैं उस दिशा में जिस हद तक वह चुप रह सकता है, संयम का उपदेश दे सकता है, वह देता रहेगा और बाकी आतंकवाद से लड़ने के लिए वह ईमानदार नहीं है। इसीलिए मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि भारत को आतंकवाद से जूझना होगा, लम्बे समय तक जूझना होगा, बहुत धैर्यपूर्वक जूझना होगा, पूरे देश को जूझना होगा, सब समुदायों को जूझना होगा।

और इसके खिलाफ हमको अपने बल पर लड़ना होगा, अमेरिका की तरफ देखने का कोई मतलब नहीं है, कोई अर्थ नहीं है। अगर उससे कुछ मदद मिलती है तो अच्छी बात है। नहीं मिलती है या अगर उसका विरोध होता है तो उसके बावजूद भी हमको इस आतंकवाद से निपटना होगा। धन्यवाद सभापति जी।

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ (Madhya Pradesh): Hon. Chairman, Sir, before I make my points, I would pay my homage to all the brave security officers, Watch and Ward officers of this House who have laid down their lives in the discharge of their duties. Sir, the laudable work which our Security Forces have done throughout these difficult times has been appreciated by the nation as a whole. So, our first resolve in this House should be that whatever and whenever we debate, we should not bring these forces into any acrimony or debate, because they are our last cutting instruments, and, if they are blunted by anyway, there will be no other weapon to fight the terrorism. Why I am repeating this is, because, initially the debate was started at a very, very sound note, but, in between, some comments were made which I did not like, and even I lost my temper; normally I do not do it. But, Sir, why I really lost my temper yesterday was because of this. Whenever I enter Parliament, I see the face of J.P. Yadav before me. Whenever I see the television, his dead body lying at the corridor of the House comes before our eyes. What a sacrifice our Watch and Ward people have made, what a sacrifice our Security Forces have made, this country will never forget; and there can be no two opinions on this that whatever we and this nation can do for them or for their families, the gratitude will be too small. So, therefore, our resolve to fight terrorism emerges from learning a lesson from these security officers.

Sir, the manifestation of terrorism, as Madam Deputy Chairman, has just now pointed out, has assumed new dimensions all over the world. India may not have made studies on this, but we know from international debate on terrorism that the methods, which the terrorism is deploying now, have become more graver, more cruel in nature and in its menace. So, therefore, the nations have to prepare themselves to combat terrorism according to their own methods. Sir, the conventional methods of terrorism are no longer in use. America could never dream that one fine morning they will meet this kind of an attack from their own aircraft; they were hijacked; and cruel methods were used against the commanders of the aircraft, they were brutally attacked; passengers were terrorised; and the tower which was the symbol of American economy was hit; their pride -- the Pentagon -- was hit; and much more could have happened, if they had

not shot down the fourth aircraft. This is the type of terrorism the world is facing. So, therefore, Sir, we should not make it a partisan issue. That is why, Sir, we deviated from the normal debate which we were having in the preceding weeks. We immediately requested that on this issue we should pause, we can resolve our differences and the domestic issues on which we all differ, later. We are not a society which thinks alike. There are genuine differences of opinion. But on issues that concern the nation, we are all united. Time and again, this country has exhibited this spirit. We have seen very difficult times in the past and we will exhibit that spirit again, if there is an occasion. So, that is where we deviated from the normal debate. We have not compromised on issues. They still remain very valid, because as Opposition, it is our duty; we are not sycophants of the Government; we are no rubber stamps; our duty is to point out faults in the Government. Dissent is the essence of democracy, and we should learn to live with this. But when it comes to the national task, we are all united. This is for which the parliamentary democracy functions. So, it was not a question of scoring points from this side or that side. Yesterday, we started on a debate which must reflect the national resolve, and the world outside, particularly, the forces which want to destabilise this country, must know that once it comes to the nation, once it comes to India, we are all united. This is only for the sake of governance that we belong to different parties. But it is here, Sir, I would remind the Government of its responsibility, because the Government has a difficult task. We have been in the Government. And, we know all these problems which the Government is facing today. Because terrorist attacks started much before, some 20 years ago. We have made supreme sacrifices fighting terrorism. Mrs. Gandhi did not compromise on terrorism. She had made a supreme sacrifice to keep the unity and integrity of this country; and the country recognises her as a great leader. Then, Shri Rajiv Gandhi, during an election campaign was assassinated. In spite of lack of security, he travelled far and wide in the country, knowing fully well that they were after his blood. He also made a supreme sacrifice to sustain democracy. This vibrant democracy continued its journey despite these losses. It has been possible because we have the inner strength to sustain democracy. We are all proud of it. As a matter of fact, the backbone of our party was broken with the assassination of these two leaders. In spite of that, the Congress Party resolve to fight terrorism continues as before. We will give full support to the Government, if they are sincere to meet the challenge of terrorism. I am not going to use any word which will hurt this side or that side of the House. But actually we want a

sincerity of purpose. When we criticise you on small issues, you term it as disservice to the country. For example, on small issues we have been debating the Prevention of Terrorism Ordinance. On this we have several valid points to make to the Government. But I am sorry to say that though I was a Minister for ten years, I was never consulted by this side, "What are your views on this Ordinance?" They should have consulted me because I was the person who had brought forth TADA in this country to deal with the Punjab problem. We never went to the streets and spoke on Television. Your Ministers are writing articles in newspapers, but they don't come to fellow parliamentarians, and ask, "What are your objections on this Ordinance?" If they had done it, I could have felt happy. After all, we are sitting in the Standing Committee, cutting across party lines, we put our heads together to enact laws. Laws are enacted by debates in Parliament, but not by making speeches in streets. You must consult your own colleagues. There are talented people in all the parties. You have senior advocates on this side and on that side. We could have given our suggestions on the objections that were there in the Ordinance. There are certain weaknesses in it. The Government has agreed to remove some of them. The press has recorded its objections. I am happy that some of them have been taken note of. But no Minister has tried to talk to the other side. Their sincerity has not been reflected in it. Therefore, we opposed it. What was the charge against the Opposition? They say, "We are not serious in meeting the threat of terrorism." Sir, with due respect to this Government, we do not take this as a non-serious issue, or, we are not negligent in our duty in combating terrorism. We have suffered from it. We have paid a very heavy price. The country's security forces have shown valour. They have also made supreme sacrifices. So, we are prepared to discuss with you in appropriate fora. Why did you avoid the Standing Committee on Home Affairs? We are discussing all the Bills there. This Ordinance could have been discussed there for two or three days; and we could have given our suggestions. They want our amendments to be sent to the Home Ministry. Then they say, "You have not sent your amendments.". It has never happened like this. We had also been in the Government. All the amendments are discussed in the parliamentary forum. Whenever there are difficult laws, you call an all party meeting for two or three days and discuss them. After all, when you deviate from the normal procedure, when you deviate from the Constitutional norm, you have to make an indepth study in order to give a proper law to your countrymen. You are not only legislating a law against Terrorists, but you are also legislating it for the community as

a whole. Our country is not a barbaric civilisation wherein you can catch a person by his neck. You have certain civil liberties. You have certain Constitutional safeguards. These have to be protected. It is here that we wanted you to consult us. But I am sorry to say that you have not done so. Ultimately, a time will come when everybody will have to sit and see that the society doesn't suffer, the common man does not suffer. As a matter of fact, he is being used to meet the threat of terrorism. When you fight a war, only the Army doesn't fight, the civilian population also contributes. When we had problems in Punjab, many Army Commanders told me, "Mr. Minister, don't fight a war with Pakistan." I said, "Why?". He said, "Because Punjab used to help you in a big way to meet the challenges, threats, from across the border. People are not yet ready to join this effort with the army." There was a point in it. There was something in it. So, you have to prepare the country as a whole for an adventure or a war. Therefore, that is where our most humble submission and most sincere desire is that they should take the entire Opposition into confidence before embarking upon any type of "meeting this threat". They will not refuse you help. But you are not prepared to take it.

Sir, I speak with anguish. The Prime Minister speaks in what is known as a 'birthday celebration' in Bombay on 12^{th}. Was it proper? If there was a threat, he should have come to the Chairman or to the Speaker saying, "I have this information". You may not share it with us. But it was legitimate that he should have taken the Presiding Officers into confidence if there is a threat to Parliament. The Presiding Officers are, at least, neutral. They are umpires. They are just like referees. They are neutral. They could be taken into confidence. You could come much more prepared. I do not blame the security forces. I am the last person to blame even the Government for these lapses because no Government would like to suffer this type of agony. But it has happened. It is a reality that we have had a narrow escape. It is because of the chivalry of the Watch and Ward Officers and the Security Officers that we are here today. But what is the message? I have never seen a Prime Minister speaking in a birthday bash about the threat to Parliament! And the next day, it happens! We have heard from the FICCI speech of the Home Minister that there is a threat to Parliament. We never knew what type of threat it was. You could share it with a few senior leaders of the Opposition. We would have been very happy to make it a more constructive cooperation. But it was not done. Are we not entitled to put our grievance in the lobby of the Government? The Government says, "No, no; they are not sincere in meeting terrorism

because they are not cooperative on the POTO." If this is the attitude, this very heavy responsibility of the Government will not be discharged by them. They are taking things lightly. Therefore, we are agitated. Otherwise, this is a threat for the nation. Everybody will suffer if Pakistan invades India or *vice-versa*. Therefore, our grievance is that the Government must do its home task first. I would urge, please do not take me in the sense that I am a political opponent. I have great admiration for the leaders of this country, who are at the helm of affairs. They are also doing a difficult task. Therefore, the first job for this country is, stop this mentality of criticising a minority of this country. They have made supreme sacrifices. From whatever we have been hearing in the speeches of the leaders outside, it appears that there is a tendency to isolate a certain section of the people. Wars are not fought by isolating a section of the people. They have fought when the country as a whole fought. We cannot go on a war against Pakistan isolating a part of the community. Therefore, this tendency should stop. Specially because you are at the helm of affairs, you have to tell your people to stop this type of criticism of a section of the people who have contributed so much for this country's magnificence. Whatever has happened in the past ...*(Interruptions)*...

श्री एस. एस. अहलुवालिया (झारखण्ड) : कहां से? खुद ही सपने देख रहे हैं आप।

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: I have read this morning two editorials of top national dailies. One is the **Times of India**. I pass it on to you. I will not argue on that. You please keep it. ...*(Interruptions)*... Ahluwaliaji, I am not saying something which should hurt you. If you want to fight a war, you will have to consolidate the strength of the nation ...*(Interruptions)*...

SHRI S. S. AHLUWALIA: I have objected ...*(Interruptions)*... Just a few minutes ago, you said that a general told you, "Don't fight because Punjab is not ready". You are wrong. Even at the top of terrorism, Punjab was always ready for the unity of the people of this country.

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: I am not disputing that. ...*(Interruptions)*...

SHRI S. S. AHLUWALIA: You are unnecessarily trying to create a confusion among the masses by saying that Punjab was not ready to ...*(Interruptions)*...

SHRI JIBON ROY (West Bengal) : You are most partisan.

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Let him have his full say.

SHRI S. S. AHLUWALIA: I have tolerated that. But, again, you are raising another thing, that some people are raising an issue about a minority.

You people were saying, the *Sikh Uggarwad*. Now, when a Muslim has called the *Muslim Uggarwad*, you are reacting to that. ...*(Interruptions)*...You never stopped from saying the *Sikh Uggarwad*. ...*(Interruptions)*...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Mr. Ahluwaliaji, your credentials are well known as to what type of a person you are. ...*(Interruptions)*... I do not need a certificate from you. You are a* You cannot challenge me. You have no credential in Parliament. ...*(Interruptions)*...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Don't call me like that. What do you mean by ...*(Interruptions)*...

THE MINISTER OF RURAL DEVELOPMENT (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): Sir, I take strong objection to this remark. A personal charge cannot be made. ...*(Interruptions)*... Mr. Bhardwaj, you have gone on a very constructive road. You were speaking for the country. You have taken a very constructive approach, and right from the Leader of the Opposition, things are going on in that way. My point is that you have just brought in the minority factor, which none from the Government side have mentioned at any stage..*(Interruptions)*...

SHRI JIBON ROY: This is the fact of the day...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: He referred to an article. ...*(Interruptions)*...Mr. Jibon Roy, I am not arguing with you. I am appealing to Bhardwaj ji to withdraw the personal comment he made on Mr. S. S. Ahluwalia. ...*(Interruptions)*...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Mr. Minister, now, you allow me to say something and tell the hon. Members not to interfere. I am telling you that I am not moved. ...*(Interruptions)*...

---

* Expunged as ordered by the Chair.

SHRI JIBON ROY: You are creating a support base within the country to intervene from outside.

श्री संजय निरुपम (महाराष्ट्र) : सभापति जी, इस पूरे विवाद में एक बुनियादी मुद्दा छूट गया। भारद्वाजजी ने कहा कि माइनारिटीज को कंडेम किया जा रहा है ...(**व्यवधान**)... एक मिनट, मैं आपको बता रहा हूं ...

श्री हंसराज भारद्वाज : मैंने ऐसा नहीं कहा ...(**व्यवधान**)...

श्री संजय निरुपम : माइनारिटीज को कोई कंडेम नहीं कर रहा है और न कोई ऐसा कर सकता है। यह हमारी साझी विरासत का एक हिस्सा है। अगर हम लोग कंडेम करते हैं तो वह शाही इमाम को करते हैं और शबाना आजामी को एप्रिसियेट करते हैं। एज ए होल हमने कभी भी माइनारिटीज को कंडेम नहीं किया। ...(**व्यवधान**)...

श्री अब्दुल गैयूर कुरैशी (मध्य प्रदेश) : कल जब एक मेंबर साहब बोल रहे थे तो वे पूरी कम्युनिटी को किसी किताब का रेफरेंस देते हुए, इस्लामिक टेररिज्म का नाम दे रहे थे और मैंने इस पर आबजेक्शन किया था। ...(**व्यवधान**)...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Please allow me to say something. I am subject to correction. I do not accept myself to be a great parliamentarian. If you want to listen to me, I will speak. Otherwise, I will sit down. Normally, I do not read editorials. But these days, when we are discussing it in a sober atmosphere, the Press does matter, whether you like it or not. Whatever editorials are written, all senior parliamentarians read them to know as to what the sense of the Press is. ...*(Interruptions)*... I am very happy to know that you have read it. Let Advaniji also read it, let the Prime Minister also read it, because, it helps them. I am not the Prime Minister. I can keep quiet. But if I keep quiet, it does not mean that the whole nation will keep quiet. Therefore, what I am submitting is this. I referred to the General, because, at that time, we were passing through a very difficult time. I would also like to refer to the speeches made by Shri Ahluwaliaji; what he was speaking at that time. But that was a very difficult time. But we are passing through the most difficult time now, because the occurrences at that time were limited to one place. Now, they have become global. What did the United States of America do? First of all, they said: "Okay." They took a national resolve. The Senate approved the President's action. Then they went to NATO and invoked article 5 of the NATO. Thereafter, they came to India, they went to Russia, China and every other place to consolidate their position before embarking upon a war on Afghanistan. What have you done? ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, before going to that, I appeal to the hon. Member to withdraw the personal remarks he made against a fellow Member. Otherwise, the other Members will also start speaking in the same way. ...*(Interruptions)*...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Mr. Minister, Mr. Ahluwalia does not need it. Mr. Ahluwalia and we are great friends. You don't need to intervene. You are not entitled to..*(Interruptions)*... We will sort it out ourselves.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: If this is the friendship, ...*(Interruptions)*... If this is the friendship, ...*(Interruptions)*... If this is the friendship, ...*(Interruptions)*...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: No, no; you ask Mr. Ahluwalia. ...*(Interruptions)*... Mr. Ahluwalia doesn't need..*(Interruptions)*... Your intervention as a Minister is uncalled for.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am a Member. If you are not going to..*(Interruptions)*...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: And if you want to interfere, you are not welcome to do so. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: If you don't want me to be civilised, then I leave it to you. ...*(Interruptions)*...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Sir, Mr. Ahluwalia doesn't need any attorney to argue his case. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, it is against the rules. If you want me to quote the rule and then raise a point of order, ...*(Interruptions)*... Sir, can anybody make a personal allegation like this? ...*(Interruptions)*...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Mr. Ahluwalia is my friend. I will talk to him. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, he made a personal allegation against him. ...*(Interruptions)*... He called him, saying He has no business to talk ...*(Interruptions)*...

---

* Expunged as ordered by the Chair.

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: No Minister interferes like this. No Minister behaves like this. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I request the Chairman to go through this and give me a ruling.

MR. CHAIRMAN: I will look into it..*(Interruptions)*...I will look into it.

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ:. Sir, I am only reminding our responsibility--our responsibility, to the Opposition and to the Government, both-- let us learn from the United States at least,--because you learn so many things from them--they consolidated not only their national unity but also the international unity. That was why they started.

I am now giving you the events; I am not charging the responsibilities, very heavy, delicate and precarious. I am telling you events after events where we have, some how or the other, not done our homework properly. Sir, I start from Kargil. Our Armed Forces wanted to cross the LoC. The Prime Minister declared, "No, we will not cross the LoC!" That was the best opportunity to do something because they had occupied our territory. But they were allowed to go because Mr. Clinton interfered and said, "Let the monkey go from your back!" It is a fact, Sir. We have the cassette of Mr. Clinton with us. You can see it for your information. So well he said, "We score a diplomatic victory as well as a victory." ...*(Interruptions)*... But, after the Kargil war, what happened? Badamibagh Cantonment was attacked! You check your records. There was an IB report that something would happen. And the Cantonment was attacked! Then came the most humiliating incident. Nepal which was a friendly country, was used as a hijacking place for our plane! And Commander Saran told us so many things, that, after Amritsar, it was allowed to take off. Thereafter, the humiliation came in Red Fort; thereafter it came in Srinagar Assembly; then, it came at the Airport, and finally, it reached here. Are we not entitled to express our agony? Are we not entitled to know from the Government what they have been doing all these days and what their preparations were. We had not been agitated to this extent earlier. Because, now, it comes to, what was, yesterday, described as the temple of our Parliamentary democracy, or as the mosque or the church of our democracy, we are seriously concerned, Sir, and I repeat it to them, we are not sycophants of this Government, we are the critics of this Government, we are legitimately, because, as I said, the Opposition is meant for this purpose, to correct the errors of the Government. If there is

no Opposition, then all sorts of things can be done, and nobody to check. And, therefore, you have been doing all this to us. Sir, I am putting this question because nothing is revealed in the Home Minister's statement about the preparations between these events. On the diplomatic front: what have they done on the diplomatic front after Kandahar? This very gentleman, who is now the Head of the Jaish-e-Mohammed, or whatever organisation it is, was taken in an aircraft by the Minister of this Government and was handed over to the people there. And he is organising terrorism! Was it not a wrong decision that a terrorist of this dimension was given away just for the asking? We did not agree on Maqbool Bhatt. This very country saw; there was a threat, and there was a lot of pressure to hand over Maqbool Bhatt, but our Government did not do it. And he was hanged and executed in Kashmir. Therefore, when you send wrong messages, we are taken as a soft State!

Let this Government resolve-- we are all with you--that we will not henceforth be treated as a soft State. What is the use of speaking like this outside, in public functions? Whenever you speak like this outside, in public functions, you are giving your mind to the enemy. It has never been done. You check the records of Parliamentary History of India. No Home Minister had ever spoken like this, *aar ya paar*, "We will cross the LoC". You check the records of both the Houses. You said, "We will cross the LoC. This is the final exhaustion of patience. We are going to *aar ya paar*". It would be much better, if you do whatever you like. But make your preparation. Let the Government take decisions. Let the Cabinet take decisions. Keep them secret and execute them. We all will applaud you on your success. But you are not doing that. You are attacking us. Then, you mislead the people of this country saying that these are the fellows who are not cooperating. How long will we go on hearing these rhetorics? We are entirely with you, with the Government, in this hour of crisis. But whenever you falter, we will not hesitate in criticising you, whether you like it or not. Therefore, on the diplomatic front what have you done? You had called the Pakistan High Commissioner. But how many people are employed by the Pakistan High Commission in Delhi? Have you ever assessed that? Do they vary? Who are they? You could have, at least, withdrawn part of your High Commission from Pakistan and forced them to withdraw all these fellows who are indulging in all this espionage work. You have not done that. I am not attacking the investigation of this case because I know much more about what is happening in Delhi. I will not say those things because it is not in the national interest. All these fellows have been roaming freely

in the streets of Delhi because there is no intelligence network to detect such persons. Your own investigating agencies will tell you what type of work they are doing freely. Some of them have been indulging in some sort of quarrels in Timarpur, Kingsway Camp and elsewhere. People now tell us that these fellows were fighting with them; they were heavily armed and all that, and nothing was done. Is it not the job of the Government to set up a proper network of intelligence in these areas, where these fellows, who are cooperating with these terrorist outfits, are known? Therefore, we are suggesting to you to keep a watch. You have not done anything on the diplomatic front to discourage Pakistan or its High Commission. We endorse what the hon. Home Minister has stated in his statement. I am very happy to hear such a statement from him and you should not raise any objection when I read it. We should make a resolve, particularly, our friends from the ruling party. The Home Minister has said, "The only answer that satisfactorily addresses this query is that Pakistan - Itself a product of the indefensible Two-Nation Theory, itself a theocratic State with an extremely tenuous tradition of democracy - is unable to reconcile itself with the reality of a secular, democratic, self-confident and steadily progressing India". It is here our salvation lies. We have to be secular. We are very happy that it comes from the mouth of the Home Minister because it goes much against the picture that the people outside the country have. This is my grievance and this is where I want to correct these leaders on their face value. Such a message that anyone of us believe in a theocratic India should not go. It is here we are happy. This is a departure from the common image of the Home Minister. Therefore, we endorse the view that the only answer to terrorism is a secular, a democratic and a vibrant India. Thank you.

सूचना और प्रसारण मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : सभापति जी, 13 दिसंबर की घटना के संबंध में विदेश मंत्री जी द्वारा पढ़े गए गृह मंत्री जी के वक्तव्य पर इस सदन में कल से चर्चा हो रही है। महोदय, यह विषय बहुत संज़ीदगी से भरा हुआ विषय है। आप जानते हैं हमारे देश में संसदीय जनतंत्र है और हमारे देश की पार्लियामेंट राजनीतिक पार्टियों के हिसाब से चलती है। इसलिए जब भी किसी विषय पर सदन के भीतर चर्चा होती है तो अधिकतर पार्टी लाइन के हिसाब से अपनी बात रखती है और सांसदों से अपेक्षा भी यही की जाती है कि वे अपनी पार्टी लाइन के भीतर बोलें और इसे उचित भी माना जाता है। अगर कोई सांसद् अपनी पार्टी लाइन से थोड़ा-बहुत इधर-उधर हो जाए तो बहुत बार टीका-टिप्पणी का शिकार होता है। लेकिन सभापति जी, कुछ विषय ऐसे भी होते हैं जो दलों की सीमाएं लांघने के लिए हमें प्रेरित करते हैं, दलों की सीमाओं से ऊपर उठने को हमें बाध्य करते हैं। इसीलिए इस सदन में बहुत बार ऐसे मौके भी आए जब सदन ने समान स्वर में बात की है। गैलरी में बैठा हुआ व्यक्ति यह कयास नहीं लगा सका कि कौन किस राजनीतिक दल से संबंध रखता है और मुझे लगता है कि आज का यह विषय भी ऐसा ही विषय है। यह समय एक-दूसरे पर दोषारोपण करने का नहीं है बल्कि यह समय

तो इकट्ठे मिल-बैठ कर सोचने का है और संयुक्त रूप से संकल्प प्रदर्शित करने का है। इसलिए सबसे पहले मैं आपके माध्यम से सदन के सभी दलों से यह अनुरोध करना चाहूंगी कि अभी तक चर्चा में इधर या उधर से कुछ भी यदि कड़वा या अप्रिय कहा गया हो तो वह रिकार्ड से भले ही खारिज़ हो या न हो, लेकिन हम अपने-अपने मन से जरूर उसको खारिज़ कर दें ताकि आगे की चर्चा हम स्वस्थ मन से कर सकें। अभी-अभी भारद्वाज जी अपनी बात रख रहे थे, उनका और मेरा बड़ा पुराना संबंध है। हम एक ही गृह राज्य से हैं और एक ही पेशे से हैं, इसलिए तर्कों की काट करना बहुत स्वाभाविक है। लेकिन अभी मैं बैठे-बैठे सोच रही थी कि क्या उन तर्कों की काट में स्वर का ऊंचा होना जरूरी होगा, स्वर का आक्रामक होना जरूरी होगा। लेकिन मुझे लगा कि नहीं, आज तो जो भी ताकत है हमारे पास वाणी की, कलम की, शस्त्र की, सब का इस्तेमाल उनके प्रति होना चाहिए जिन आतंकवादियों ने हमें चुनौती दी है। आपस में उलझ कर हम अपनी ऊर्जा को क्यों बर्बाद करें। इसलिए यह नहीं कि मैं उनके प्रश्नों का उत्तर नहीं दूंगी, जो भी सवाल इस सदन में उठाए गए हैं नेता विपक्ष के द्वारा, अन्य साथियों के द्वारा, स्वयं भारद्वाज जी के द्वारा, मैं जरूर उनकी शंकाओं का निवारण करना चाहूंगी, उनके प्रश्नों का जवाब देना चाहूंगी, लेकिन बहुत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में देना चाहूंगी।

सब से पहला सवाल विपक्ष के नेता ने सुरक्षा की खामी का उठाया। हमारे बहुत से सांसदों ने इस बात को कहा कि आतंकवादियों का संसद् के परिसर में प्रवेश भर कर जाना हमारी सुरक्षा खामी को झलकाता है। मैं बहुत अदब से यह बात कहना चाहती हूं कि अगर कोई आदमी मरने की ठान ले और स्वयं मर कर आप पर आक्रमण करने की योजना बनाए तो वह आपके घर के बाहर तक तो जरूर पहुंचेगा। आपकी सुरक्षा की अग्नि-परीक्षा इस बात में है कि वह आपके घर के अंदर दाखिल हो सका या नहीं, वह अपने इरादे में कामयाब हो सका या नहीं। अगर इन दो कसौटियों पर आप हमारी सुरक्षा खामी को या 13 दिसंबर की घटना को तौलेंगे तो आप पायेंगे कि यही नहीं कि वे आतंकवादी संसद् के अंदर दाखिल नहीं हो सके बल्कि वे पांचों के पांचों 25 मिनट में ढेर भी कर दिए गए। 11 सितम्बर को एक घटना अमरीका में हुई थी। शायद हमारे विपक्ष के सांसदों को अच्छा नहीं लगता कि 13 दिसंबर की तुलना 11 सितम्बर से की जाए और मैं तुलना करना भी नहीं चाहती, लेकिन यह तो हकीकत है कि अमरीका की सुरक्षा एजेंसियों को अपने पर बड़ा नाज था। अमरीका की गुप्तचर एजेंसियों की विश्वभर में धाक थी कि उनकी आंख से कुछ बच नहीं सकता, उनके सैटेलाइट्स अपनी निगाह में सब कुछ कैद कर लेते हैं। लोग कहते थे कि अमरीका की जानकारी के बिना परिंदा भी पर नहीं मार सकता। लेकिन 11 सितम्बर को क्या हुआ? उनकी सुरक्षा एजेंसियों की पोल खोलते हुए, उनकी गुप्तचर एजेंसियों को धता बताते हुए, उनके एअरपोर्ट की चौकसी की धज्जियां उड़ाते हुए 11 सितम्बर की घटना घटी। उन्हीं के विमान, उन्हीं का ईंधन, उन्हीं के एअरपोर्ट से अपहृत किए गए जहाज, उन्हीं के भवनों पर दे मारे गए और भवन भी कोई साधारण नहीं था, सभापति जी, डब्ल्यू.टी.सी., अमरीका की आर्थिक प्रगति का प्रतीक, पैंटागन, उनकी सैन्य शक्ति का परिचायक, लेकिन डब्ल्यू.टी.सी. की दोनों मीनारें क्षण भर में धराशायी हो गईं और 6 हजार लोग मौत की गोद में सुला दिए गए, लेकिन आप 13 दिसम्बर की घटना देखें तो यह नहीं कि एक भी आतंकवादी संसद भवन में दाखिल नहीं हो सका बल्कि एक भी आतंकवादी बचकर भाग नहीं सका। यह थी हमारी सुरक्षा व्यवस्था कि एक भी आतंकवादी बचकर भाग नहीं सका। सभापति महोदय, हमारे सुरक्षा-कर्मियों ने पांचों की लाशें बिछा दीं। जब हम यह बात कहते हैं तो कहा जाता है इस का श्रेय तो सुरक्षाकर्मियों को जाना चाहिए, सरकार इस का श्रेय क्यों लेती है। मैं भी सुरक्षा-कर्मियों को श्रेय

12.00 Noon

देना चाहूंगी, जरूर देना चाहूंगी। उन्होंने अपनी जान पर खेलकर हम लोगों की रक्षा की, लेकिन आप हों या हम हों, सरकार आप की हो या हमारी, सुरक्षा का काम तो सभापति जी, सुरक्षा एजेंसियां ही करेंगी। हम और आप तो संसद के बाहर शस्त्र लेकर खड़े नहीं होंगे। सरकार किसी की भी हो मैं या आप, सांसद या राजनेता, मंत्री कभी सुरक्षा की घेराबंदी तो नहीं करेंगे। हम यहां सन् 1971 की बात करते हैं, इस चर्चा में भी वह बात आई है। सन् 71 में जब युद्ध हुआ तो लड़ी तो फौजें थीं मनमोहन सिंह जी। जनरल नियाजी ने आत्म-समर्पण तो जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के सामने किया था। पाकिस्तानी सेना के 90 हजार युद्ध बंदियों ने हिंदुस्तान की सेना के अफसर के सामने आत्म-समर्पण किया था, लेकिन जीत का सेहरा श्रीमती गांधी के सिर बंधा था। हम सब ने बांधा था, बिना कंजूसी किए बांधा था, पूरा श्रेय दिया था उन्हें। सभापति जी, लड़ती फौज है, नाम कमांडर का होता है। कभी किसी ने यह नहीं कहा था कि यह श्रीमती गांधी की विजय नहीं है। तो अगर यश सरकार के खाते में जाता है, अपयश सरकार के खाते में जाएगा। अगर अपयश सरकार के खाते में जाता है तो यश भी सरकार के खाते में जाना चाहिए। आखिरकार यह सब जो हुआ, वह सुरक्षा व्यवस्था किस की थी? सुरक्षा व्यवस्था चुस्त थी, दुरुस्त थी। उस सुरक्षा व्यवस्था में वाच एंड वार्ड अंदर था तो बाहर सी.आर.पी.एफ. भी था, बाहर दिल्ली पुलिस भी थी, बाहर एस.पी.जी. के सुरक्षा कर्मी भी थे और अंदर एस.पी.जी. के सुरक्षा कर्मी भी थे। ये चुस्त-दुरुस्त सुरक्षा व्यवस्था का घेरा जिस ने उस दिन एक बड़े हादसे से बचा लिया, क्या इस के लिए हम सरकार को श्रेय देना नहीं चाहेंगे? अगर श्रेय न दें, तो कम-से-कम अपयश तो न दें। सभापति जी, सच्चाई यह है कि पहले से यह बता देना कि संसद पर आक्रमण हो सकता है, यह हमारी गुप्तचर एजेंसियों की सफलता है। उस दिन एक भी आतंकवादी को अंदर प्रवेश करने से रोक देना, यह हमारी सुरक्षा एजेंसियों की सफलता है और तीन दिन के अंदर तहकीकात कर के पूरी-की-पूरी साजिश का सबूतों के साथ पर्दाफाश कर देना, यह हमारी जांच एजेंसियों की सफलता है। इसलिए मैं चाहूंगी कि इस सदन से हमारी तीनों एजेंसियों के अधिकारियों को शाबाशी दी जानी चाहिए। जो शहीद हो गए, उन को भावभीनी श्रद्धांजलि, लेकिन जिन अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपना कर्त्तव्य अपनी मेहनत से ईमानदारी, योग्यता और बहादुरी से निभाया, उन को इस सदन का अभिवादन मिलना चाहिए। यह होगी वह स्पष्ट सोच जो 13 दिसम्बर की घटना के बाद अपेक्षित है।

सभापति जी, एक बात मैंने पढ़ी भी और सुनी भी जिस में यह कहा गया कि सुरक्षाकर्मी तो बाहर बहादुरी से रक्षा कर रहे थे, लेकिन अंदर सेंट्रल हॉल में बैठे सांसद भयभीत थे, डरे हुए थे। यह हम में से किसी ने नहीं कहा, कुछ पत्रकारों ने यह टिप्पणी की किसी पेनल डिस्कसन में। सच मानिए, मुझे केवल दुख नहीं हुआ, रोष से मेरा चेहरा तमतमा गया। मैंने कभी भी किसी की बात को काटने के लिए झूठ शब्द का प्रयोग नहीं किया। यह शब्द असंसदीय तो है ही, मेरी शैली से मेल भी नहीं खाता। इसलिए मैं हमेशा झूठ की जगह कहती हूं कि यह सत्य से परे है, पर यकीन मानिए आज मुझे लगता है कि अपने मन के भावों को प्रकट करने के लिए यह शब्द छोटा पड़ रहा है, हल्का पड़ रहा है। इसलिए मैं कहना चाहूंगी कि यह टिप्पणी सरासर गलत है, यह टिप्पणी पूर्णतः असत्य है, यह टिप्पणी एकदम निराधार है। मैं स्वयं उस समय सेंट्रल हॉल में मौजूद थी। लोक सभा में मेरा प्रश्नकाल था, वह सदन स्थगित हो गया और मैं सेंट्रल हॉल में आ गयी। दोनों सदन स्थगित हो गए और करीब सौ, डेढ़ सौ सांसद सेंट्रल हॉल में आ गए। जैसे ही

यह हादसा हुआ, हम सभी लोग एक साथ बैठ गए। मेरे साथ संयोग से बहुत ही वरिष्ठ लोग बैठे थे, मेरे बगल में बैठे थे सोमनाथ चटर्जी जी, सामने बैठे थे प्रणब मुखर्जी जी, संजय निरूपम जी, नीलोत्पल बसु जी। हम सभी एक साथ बैठे थे। भय और डर तो दूर-दूर, किसी के चेहरे पर, माथे पर शिकन भी नहीं थी। हम लोग बैठकर आपस में बात कर रहे थे, स्थिति की समीक्षा कर रहे थे, एक दूसरे के मोबाइल फोन लेकर बाहर से प्रामाणिक जानकारी हासिल करने की कोशिश कर रहे थे। मैं आपको बताऊं, सभापति जी, कि वहां पर एक प्रासांगिक घटना घटी कि डी.एम.के. के सांसद, जो यहां पर बैठे हैं, पी.एन. शिवाजी वहां बैठे थे, दो दिन पहले सुब्रह्मण्यम्भारती जी का जन्म-दिवस समारोह था चेन्नई में, मुझे उस समारोह में भाग लेने जाना था, मैंने शिवाजी से कहा कि मुझे सुब्रह्मण्यम भारती की कुछ तमिल कविताओं की कुछ पंक्तियां अगर तुम बता दो तो मैं चाहूंगी कि मैं उन पंक्तियों को वहां बोलूं। इन्होंने मुझे तीन कविताओं की अलग अलग पंक्तियां सुना दीं। उस समय जब यह घटना घटी तो मैं शिवाजी के पास उठकर गई और मैंने कहा कि शिवा, जो तुमने मुझे पंक्तियां बताई थीं, उसमें से भारती जी की एक कविता कितनी प्रासंगिक हो गई और वह मैंने इन्हें सुनाई। भारती जी, जिन्हें महाकवि की उपाधि दी गई है, उनकी कविता में कहा गया है, सभापति जी, कि :

अछमिलइ अच्छमिलइ अछमेम्बदिलै उछीमीदु वानिदिन्दु वीड्रगिन्रापोदिलुम ।
अछमिलइ अच्छमिलइ ...... ।

सभापति जी, मैंने इनसे कहा कि देखो, आते आते मैंने इसका हिन्दी अनुवाद किया है कि भारती जी ने क्या कहा है :

निडर बनो, निडर बनो, आकाश चाहे गिर पड़े मत डरो, मत डरो ।
निडर बनो, निडर बनो ।

मैंने शिवा जी से कहा कि मैं आते हुए इसका हिन्दी अनुवाद कर रही थी, मुझे क्या मालूम था कि यह हादसा हो जाएगा और यह कविता इतनी प्रासांगिक हो जाएगी। यह वातावरण था, सभापति जी, उस समय सेंट्रल हाल का, केन्द्रीय कक्ष का। लोग भय और तनाव की बात करते हैं, लेकिन वहां बात केवल बहादुरी की हो रही थी, वहां बात केवल वीरता की हो रही थी। इसलिए मैं आज इस सदन के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहती हूँ कि यह भ्रांति जो फैलाई गई, जिस टिप्पणी ने हमारे सम्मान को धूमिल किया, हमारी छवि को नकारने की बात की, वह बिल्कुल सत्य नहीं है, सारे के सारे सांसद एकजुट होकर उस समय सेंट्रल हाल में बैठे हुए थे और आपस में बात कर रहे थे।

आदरणीय सभापति जी, कल जब मुझे पता चला कि प्रणब दा ने सदन में बोला है, मैं चूंकि नहीं थी उस समय सदन में, मुझे लगा कि मुझे वह भाषण मंगाकर पढ़ना चाहिए तो मैंने डा. मनमोहन सिंह जी का भाषण भी मंगाया, प्रणब मुखर्जी जी का भाषण भी मंगवाया और जितने जो भाषण यहां हुए थे उन्हें मंगवाया। मैंने उन्हें देखा कि ऐसे कौन से प्रश्न हैं, जो बहुत उद्वेलित होकर उठाए जा रहे हैं। मुझे लगा प्रणब दा ने एक प्रश्न बहुत उद्वेलित होकर उठाया और बार बार उसे दोहरा रहे थे कि ठीक है जो हो गया वह तो हो गया, लेकिन आगे क्या करना है? उन्होंने तीन बार एक शब्द का इस्तेमाल किया - एक्शन का। What is your gameplan? What is your action plan? Do I know what is your action plan? उन्होंने यह भी कहा कि उस एक्शन प्लान में मैं कहां हूँ? वहां 'मैं' का मतलब भारत से है, कि इंडिया कहां है?

क्या उस एक्शन प्लान में इंडिया है? कुछ सांसदों ने कहा कि चलिए, वह तो हो गया, आप यह बताइए कि आपके पास विकल्प क्या है?

आदरणीय सभापति जी, आपके माध्यम से मैं बहुत विनम्रता से सदन के साथियों को यह कहना चाहूंगी कि चर्चा लक्ष्य की कीजिए, विकल्प की नहीं। विकल्पों की चर्चा खुले में नहीं की जानी चाहिए। विकल्प तो सरकार के पास सारे हैं और सारे होने भी चाहिएं क्योंकि परिस्थिति जैसी मांग करे वैसा विकल्प चुन लिया जाना चाहिए। लेकिन, जिस तरह के हालात हैं, उसमें परिस्थिति दिनों में नहीं बल्कि घंटों में बदलती हैं। अभी कोई विकल्प हम सुझाएं, लेकिन हो सकता है कि एक घंटे बाद वह अप्रासंगिक हो जाए और कोई दूसरा विकल्प चुनना पड़े। इसलिए विकल्प नीतिकारों पर आप छोड़ दें। हां, लक्ष्य की आप चर्चा करें कि हम प्राप्त क्या करना चाहते हैं। इस सदन से संदेश दें कि सरकार के सामने यह लक्ष्य है और वह उसको प्राप्त करे। उसके लिए उसे चाहे कोई माध्यम अपनाना पड़े। और जब मैंने लक्ष्य के बारे में सोचा तो मुझे देर नहीं लगी, एक क्षण में वह लक्ष्य मेरे सामने आ कर खड़ा हो गया। वह लक्ष्य है वह शपथ, जो हमने सांसद के रूप में खाई है, वह लक्ष्य है वह शपथ, जो सरकार में बैठे लोगों ने मंत्री के रूप में खाई है। जब हम सांसद के रूप में चुने जाते हैं तो इस सदन का हिस्सा बनने से पहले यहां खड़े होकर हम कसम खाते हैं, उस कसम का वाक्य है - मैं भारत की प्रभुता और अखण्डता को अक्षुण्ण रखुंगा। यही लक्ष्य है भारत की प्रभुता और अखण्डता को अक्षुण्ण रखने का, भारत की सार्वभौमिकता को बचाने का, उस पर किसी तरह के बादल न आने देने का और यह लक्ष्य पूरा करने के लिए एकजुटता का प्रदर्शन करना है, एक संकल्प लेना है। जहां तक विकल्पों की चर्चा है, विकल्प तो बहुत से हो सकते हैं, ऐक्शन प्लान बहुत से हो सकते हैं लेकिन मैं प्रणब दा से कहना चाहूंगी कि यहां विकल्पों का खुलासा करने की मांग करना या खुलासा करना बुद्धिमता नहीं होगी। किसी भी नीति की सफलता का रहस्य होता है उसकी गोपनीयता और अगर आज के इस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के युग में हम उस गोपनीयता को बरकरार रख सके तो यह हमारी डबल सफलता होगी। लेकिन, हां, जिस ऐक्शन प्लान की वे बात कर रहे हैं, मैं यह नहीं बता सकती कि वह ऐक्शन प्लान क्या होगा, मुझे अधिकार भी नहीं है, लेकिन मैं यह बता सकती हूं कि वह ऐक्शन प्लान कैसा होगा, उसका स्वरूप क्या होगा और मैं इस सदन में कह सकती हूं कि वह ऐक्शन प्लान ऐसा होगा जिसमें डा. मनमोहन सिंह की सलाह होगी और अटल बिहारी वाजपेयी की अगुवाई होगी, वह ऐक्शन प्लान ऐसा होगा जिसमें प्रणब दा का अनुभव होगा और नीलोत्पल की तरुणाई होगी, वह ऐक्शन प्लान ऐसा होगा जिसमें वैरागी जी का देशप्रेम होगा तो शबाना की वतनपरस्ती होगी, वह ऐक्शन प्लान ऐसा होगा जिसमें ...(व्यवधान)... ऐक्शन सही समय पर होगा, ऐप्रोप्रिएट टाइम पर होगा। तो मैं कह रही थी कि वह ऐक्शन प्लान ऐसा होगा जिसमें जमरल चौधरी का तजुर्बा होगा और संजय निरुपम की मस्ती होगी, वह ऐक्शन प्लान ऐसा होगा जिसमें बी.पी. सिंहल का जोश होगा तो एस.बी. चव्हाण का होश होगा, वह जोश और होश का संगम होगा। सभापति जी, वह ऐक्शन प्लान ऐसा होगा जिसमें भावना देशवासियों की प्रदर्शित होगी। ...(व्यवधान)...

डा. वाई. लक्ष्मी प्रसाद (आन्ध्र प्रदेश) : पार्लियामेंट में शब्द होते हैं, आरग्युमेंट होते हैं, शब्द होते हैं, लड़ाई नहीं होती !

श्रीमती सुषमा स्वराज : बैठिए, बैठिए।

प्रणब दा पूछ रहे थे कि उस ऐक्शन प्लान में मैं यानी भारत कहां होगा। प्रणब दा, ऐसा होगा वह ऐक्शन प्लान जिसके केन्द्र में होगा सिर्फ हिन्दुस्तान, सिर्फ हिन्दुस्तान, सिर्फ हिन्दुस्तान ।

यहां बहुत लोगों ने संदेह प्रकट किया अमरीका के कॉलेन पॉवेल ने कह दिया कि आप रिस्ट्रेन बरतिए, आप संयम बरतिए, क्या आप उनकी सलाह पर संयम बरतेंगे? मैं इस सदन में खड़े होकर दृढ़ता से कहना चाहती हूं कि भारत की रणनीति भारत के राष्ट्रीय हितों को सामने रखकर बनाई जाएगी, किसी की सलाह और मश्विरे पर नहीं बनाई जाएगी, किसी के डर, भय और दबाव पर नहीं बनाई जाएगी। और हम क्यों चिंतित हो रहे हैं, पिछले तीन साल का इतिहास गवाह है, सभापति जी, इस बात का। अमरीका तो नहीं चाहता था कि हम अणु परीक्षण करें, लेकिन अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की आवश्यकताओं को सामने रखते हुए अमरीका की परवाह किए बिना हमने अणु परीक्षण करके अपने साहस का प्रदर्शन किया। करगिल में हमारी फौजों ने अगर अपने शौर्य का प्रदर्शन किया तो एल.ओ.सी., नियंत्रण रेखा, पार न करने का निर्णय लेकर सरकार ने अपना धैर्य प्रदर्शित किया। अगर आगरा के लिए जनरल परवेज़ मुशर्रफ को दावत देकर हमने अपनी कूटनीतिक परिपक्वता का प्रदर्शन किया तो उन्हें खाली हाथ भेजकर अपनी दृढ़ता का प्रदर्शन किया। तीन साल में एक-एक पड़ाव ऐसा आया - लाहौर बस यात्रा से लेकर आज तक वह कौन सी मंजिलें हैं जब हम साहस में चूके हों या संयम में चूके हों, जब हम शौर्य में चूके हों या धैर्य में चूके हों, जब हम शालीनता में चूके हों या दृढ़ता में चूके हों। हमें अमरीका से संयम की सलाह लेने की आवश्यकता नहीं है। जब कॉलेन पॉवेल का बयान आया तो मुझे लगा कि कौन किसको सलाह दे रहा है। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहीं ते नर न घनेरे' - औरों को नसीहत, खुद मियां फजीहत। कौन किसको सलाह दे रहा है। हमें अमरीका से संयम की सीख लेने की आवश्यकता नहीं है, सभापति जी, हमारे अपने शास्त्र ऐसे उदाहरणों से भरे पड़े हैं। याद है हिन्दुस्तान के शासकों को महाभारत में दुर्योधन के पास कृष्ण का संधि प्रस्ताव लेकर जाना और अंतिम क्षणों तक युद्ध को टालने का प्रयत्न करना हमें संयम की सीख देता है, लेकिन रामायण में समुद्र के द्वारा विनय स्वीकार न करने के बाद राम का क्रोधित होकर प्रत्यंचा चढ़ाकर कहना - 'भय बिन होए न प्रीत', हमें धनुष-बाण संधान की भी प्रेरणा देता है। सभापति महोदय, विकल्प क्या होगा, कैसा होगा, मैं एक बात कह सकती हूं कि परिस्थितियों का जैसा तकाज़ा होगा, जवाब वैसा ही दिया जाएगा, एकदम माकूल, एकदम उपयुक्त जवाब दिया जाएगा और उसमें कहीं सरकार चूकती हुई दिखाई नहीं देगी। मुझे दुःख हुआ जब प्रणब दा ने अंत में यह बात कही कि अगर मुझ पर एक अंगुली उठाओगे तो तीन अंगुलियां तुम्हारी तरफ भी होंगी। सभापति ज़ी, मुझे न तो एक अंगुली उनकी तरफ दिख रही है और न तीन अंगुलियां अपनी तरफ, मुझे तो ये पांचो अंगुलियां मुट्ठी बनती हुई दिखाई दे रही हैं - आतंकवादियों को चुनौती देती हुई मुट्ठी, विजय की घोषणा करती हुई मुट्ठी ।

सभापति जी, यह समय "मैं" या "आप" के लहज़े में बात करने का नहीं है, यह समय "हम" के लहज़े में बात करने का है, "We the people of India, We the Members of Parliament of India", इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि आज की विजय की पूर्व शर्त है यह एकजुटता। यदि एक बार हम एकजुट होकर संकेत दे दें तो यही एकजुटता हमारा पथ प्रदर्शित करेगी और यही एकजुटता हमारी विजय-वाहिनी बनेगी। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्रीमती सरोज दुबे : माननीय सभापति महोदय, माननीय गृह मंत्री जी के वक्तव्य पर आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करती हूं। देश की सबसे संवेदनशील जगह, देश की सर्वोच्च पंचायत और लोकतंत्र के प्रतीक पर आतंकवादियों द्वारा हमला किया गया, यह देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता पर हमला है। यह पाकिस्तान पोषित आतंकवाद के दुस्साहस की पराकाष्ठा है। महोदय, 13 दिसंबर को आतंकवाद द्वारा की गई कायरतापूर्ण घटना की मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से तीव्र भर्त्सना करती हूं और साथ ही साथ अपने दल की तरफ से आतंकवाद द्वारा दी गई चुनौती को स्वीकार करते हुए वर्तमान सरकार द्वारा उठाए गए सभी विवेकपूर्ण और सुविचारित कदमों से कदम मिलाकर चलने का आश्वासन देती हूं ।

महोदय, आज हम अगर इस सम्मानित सदन में 13 दिसंबर की घटना पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हो सके हैं तो उसके पीछे हमारे सुरक्षाकर्मियों के बलिदान की गाथा छिपी है। हमारे सुरक्षाकर्मियों ने इस देश की सर्वोच्च पंचायत, इस देश की सर्वोच्च प्रतिनिधि सभा की नींव को अपने खून से सींचकर पुख्ता कर दिया और इसी वजह से आज हम यहां एकत्रित हुए हैं। हम जिंदा इसलिए हैं कि हमारे सुरक्षाकर्मियों ने अपनी जान दे दी और नि:शस्त्र होते हुए भी बम और हथियारों से लैस लोगों के सामने बहादुरीपूर्वक लड़ते हुए अपनी कर्तव्यपरायणता की अनूठी मिसाल कायम की। यह देश इसके लिए हमेशा उनका ऋणी रहेगा और उनके बलिदान की अनूठी मिसाल हमेशा हमारे लिए प्रेरणा-स्रोत का काम करती रहेगी ।

महोदय, मैं शहीदों के शोक-संतप्त परिवारों के प्रति अपने दल की तरफ से संवेदना व्यक्त करती हूं। शहीद कमलेश कुमारी ने बड़ी बहादुरी के साथ अपने प्राणों की आहुति दी और अपने प्राणों की आहुति देते हुए महिला बलिदानियों की श्रृंखला की कड़ी में अपना नाम जोड़ते हुए उन्होंने अनूठी मिसाल कायम की। अपने तीन बिलखते हुए बच्चों को छोड़कर उन्होंने जो मिसाल कायम की, इसके लिए मैं उनके परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट करती हूं। उन्होंने यह दिखा दिया कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में चाहे वह बलिदान का क्षेत्र हो, चाहे वह सेवा का क्षेत्र हो, महिलाएं किसी से कम नहीं हैं। जो सुरक्षाकर्मी अस्पताल में हैं, मैं उनके स्वस्थ और दीर्घायु होने की कामना करती हूं ।

महोदय, हम बच गए क्योंकि शहादत दी गई और शहादत देकर उस भयानक हमले को विफल कर दिया गया। अब लोगों के सामने यह सवाल तैर रहा है कि संसद पर हमला कैसे हुआ? संसद पर यह हमला बहुत अप्रत्याशित नहीं था क्योंकि इसकी संभावना बहुत पहले से व्यक्त की जा रही थी। महोदय, 11 सितंबर की घटना के बाद यह तय हो गया था कि दिल्ली आतंकवादियों के निशाने पर है। मुम्बई के अल-कायदा के अफरोज ने भी यह बयान दिया था कि हमारी संसद उनके निशाने पर है। प्रधान मंत्री जी ने 12 दिसम्बर को मुम्बई में कहा कि आतंकवादी हमारी संसद पर हमला करना चाहते हैं, गृह मंत्री जी भी इस तरह का बयान देते रहे और आतंकवादियों के लिए इस तरह का हमला किया जाना पहले से ही निश्चित था क्योंकि जिस तरह से अफगानिस्तान में इनकी सफाई हुई, जिस तरह से इनका खात्मा हुआ तो वह यह दिखाने के लिए कि हम कश्मीर में और पाकिस्तान में कमजोर नहीं हैं, उन्होंने यह बताने के लिए कि हम 11 सितम्बर के बाद ज्यादा मजबूत हैं, उन्होंने यह हमला किया। अभी हमारी बहन सुषमा जी ने बड़े जोर शोर से शब्दों का जाल फैलाते हुए बताया कि कहां लापरवाही हुई थी, कहां चूक हुई थी। मैं यह बताने के लिए नहीं खड़ी हुई, यह आलोचना नहीं करना चाहती कि कहां चूक हुई है।

लेकिन जब सवाल उठा है तो मैं यह कहना चाहती हूं कि यह बात सच है कि हमारे सुरक्षाकर्मियों ने अपने जीवन का बलिदान दिया। लेकिन क्या यह सच नहीं है कि गेट को पार करते हुए कार संसद के परिसर में आ गई, क्या यह सच नहीं है कि एक अम्बेस्डर कार विस्फोटक भरकर, ए.के. 47 लेकर और तमाम हेंड ग्रेनेड लेकर पूरे वी.वी.आई.पी. क्षेत्र में अति सुरक्षित क्षेत्र को पार करती हुई, संसद के परिसर में उपराष्ट्रपति महोदय के 11 नम्बर गेट पर आकर खड़ी हो गई? क्या यह सच नहीं है कि यह हमारी सुरक्षा खामियों को बताता है? जब हमारे प्रधान मंत्री जी को मालूम था, जब हमारे गृह मंत्री जी को मालूम था और जब पूरा विश्व जान रहा था कि भारत आतंकवादियों के निशाने पर है तो सुरक्षा व्यवस्था क्यों नहीं बरती गई? जब फूलन देवी की दिन दहाड़े हत्या हुई थी तब भी वी.वी.आई.पी. क्षेत्र की सुरक्षा को पुख्ता करने की बात की गई थी। तो क्या हम संसद भवन की सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता नहीं कर सकते थे? अगर हम सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता कर लेते तो आज हमारे जो 9 सुरक्षाकर्मियों ने बलिदान दिया है हम उनका बलिदान होने से बचा सकते थे। महोदय, कल गृहमंत्री जी का वक्तव्य आया। जो भी वक्तव्य आया हम लोग उससे ज्यादा जानकारी मीडिया से प्राप्त कर चुके हैं। लेकिन आज तक सरकार यह नहीं बताती है कि वह अम्बेसडर कार किस गेट से घुसी - पार्लियामेंट की तरफ से घुसी या विजय चौक की तरफ से घुसी, यह आज तक नहीं बताया जा रहा है। क्या वजह है? यह जरूर किसी महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर छिपाए हुए है इसलिए इसको छिपाने का प्रयास किया जा रहा है।

महोदय, संसद हमारी सुरक्षा व्यवस्था और लोकतांत्रिक सम्प्रभुता का प्रतीक है। संसद पर हमला होना बहुत ही भयानक है और आज हर किसी के मन में यह सवाल उठ रहा है कि अगर संसद सुरक्षित नहीं है तो हम कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। इससे आतंकवादियों का मनोबल बढ़ता है लेकिन देश की जनता का मनोबल घटता है। इसलिए आतंकवादियों के मनोबल को गिराने के लिए हमें एक कठोर संकल्प लेना होगा, केवल बातों की, शब्दों की बमबारी से आतंकवादियों का खात्मा होने वाला नहीं है। हम बहुत दिनों से सुन रहे हैं कि आर-पार की लड़ाई लड़ी जाएगी, हम आतंकवादियों को आकाश-पाताल से खोज निकालेंगे। आज सातवां दिन हो गया, हमारे सुरक्षा कर्मियों ने जिन्होंने बलिदान दिया उनके परिवार वाले भी यह सोच रहे हैं कि कुछ तो होगा तथा उनका बलिदान रंग लाएगा। लेकिन यहां किसी का खून गरम नहीं हुआ, केवल शब्दों के तीर मारे जा रहे हैं, केवल शब्दों के जाल में उलझाने का काम किया जा रहा है। माननीया सुषमा जी, प्रणब जी बहुत ही वरिष्ठ नेता हैं इस सदन के, उनको अच्छी तरह से मालूम है कि गवर्नमेंट अपना एक्शन प्लान यहां पर घोषित करने वाली नहीं है। वह सब पर्दे के पीछे ही तय होगा, वह सुरक्षा व्यवस्था ही तय करेगी। उसमें नीलोत्पल जी की तरुणाई होगी या शबाना जी का योगदान होगा, यह सब जानते हैं। लेकिन वह कब होगा, इंतजार की घड़ियां खत्म हो गई, देश की जनता मुखर हो गई, देश का नागरिक जो पीड़ित था, जो अपनी समस्याओं से जूझ रहा था आज अपनी समस्याओं को छोड़ कर वह जानना चाहता है कि यह सरकार देश के मान-सम्मान की रक्षा के लिए कौन सा कदम उठाना चाहती है। यह वह देश है जहां महाराणा प्रताप ने घास की रोटियां खाकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी। वह देश इंतजार कर रहा है, अमेरिका का इंतजार कर रहा है। अमेरिका के बारे में माननीय विदेश मंत्री जी का बड़ा भारी दावा था कि अमेरिका से हमारे संबंध बड़े पुख्ता हो गए, बुनियाद बड़ी पुख्ता हो गई है। कहां है वह अमेरिका, कहां है पुख्ता बुनियाद का अमेरिका? उसका कालिन पॉवल कहता है कि संयम से काम लीजिए, कॉलिन पॉवेल कहता है कि नरम रुख अपनाइए। पाकिस्तान की वकालत करते हुए कहता है कि पाकिस्तान आतंकवादी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई करेगा और हम केवल अमेरिका

की तरफ देख रहे हैं। हम आपको यह बताना चाहते हैं कि हम अमेरिका नहीं हैं कि पूरा विश्व हमारे साथ आ जायेगा। सभापति महोदय, हमारे सामने जब भी कोई समस्या आई हम पूरे विश्व के मंच पर अकेले, असहाय से खड़े रहे, चाहे वह विमान अपहरण करके कंधार ले जाने का मामला हो, चाहे वह जम्मू-काश्मीर की विधान सभा पर हमला हो, चाहे प्रधान मंत्री जी के कार्यालय के पीछे बम विस्फोट हुआ हो, हम जहां के तहां अकेले खड़े रहे, कोई हमारे लिए आगे बढ़कर नहीं आया। मुशर्रफ आये, उनके सामने भी कोई बोलने के लिए तैयार नहीं था, किस बात का हम दावा करते हैं, हम तो विश्व में अपनी असहायता प्रदर्शित करने के लिए खड़े हुए हैं। पिछली बार मैंने कह दिया था कि विदेश मंत्री जी बड़े दौरे पर जाया करते हैं तो शायद उनको बुरा लगा था, लेकिन उन दौरों का नतीजा क्या निकल रहा है, कहीं कुछ नहीं है। जब से सोवियत संघ बिखर गया है तब से रूस भी हमारे साथ खड़ा नहीं होता है, चीन का तो कहना ही क्या? पाकिस्तान के राष्ट्रपति मुशर्रफ चीन के दौरे पर जा रहे हैं। हम किसके लिए रास्ता देख रहे हैं? विश्व जनमत हमारे साथ नहीं है। हम तो इजराइल की भी नकल नहीं कर पाये। इजराइल में निरपराध लोगों का वध हुआ तो उसने तुरंत हमला करके अपने मान-सम्मान की रक्षा की। क्या हम अपने मान-सम्मान की रक्षा नहीं कर सकते हैं? जबकि हम सफलता का डंका पीट रहे हैं। बार-बार यह कहा जा रहा है कि तीन साल का इतिहास उठाकर देखिए। हमने हर जगह पर अपने झंडे गाड़े हैं, कौन से झंडे गाड़े हैं? हमारे विमान का अपहरण हो गया, उसको कंधार ले जाया गया और आपने आतंकवादियों को वहां पर ले जाकर खुद समर्पित कर दिया। इससे बड़ा काला दिन कौन सा हो सकता है। जब कभी कोई हमला हुआ तो आपने अमेरिका को खत लिख दिया। हमारी जम्मू-काश्मीर की विधान सभा पर हमला हुआ, हमारे 40 जवान मारे गए, हमारी प्रतिष्ठा पर हमला हुआ, लेकिन क्या हुआ? एक चिट्ठी अमेरिका के राष्ट्रपति को लिख दी गई। वह बड़ा भारी हमारा गार्जियन है, मालिक है, उसे चिट्ठी लिख दी गई और उसके बाद सब खत्म। मुख्य मंत्री फूट-फूट कर रोये, उन्होंने कहा कि रोज-रोज मरने से अच्छा है कि हम एक दिन मर जाये, लेकिन सरकार ने अपने शब्दों का जाल फैलाया, शब्दों के तीर चलाये और अपनी वाकपटुता में उलझाकर इस देश को फिर शांत कर दिया। लेकिन अब सिर से पानी गुजर गया है। इस बार संसद पर हमला हुआ है, देश की एकता-अखंडता पर हमला हुआ है, देश के मान-सम्मान पर हमला हुआ है। आज भारत मां की यह पुकार है, तुम्हारी तरफ देख रही है, उठो सपूतों इस देश के मान-सम्मान की रक्षा के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाओ। आज वह समय आ गया है जब हम कह सकते हैं, "सरफरोशी की तमन्ना आज हमारे दिल में है, देखना है जान कितने बाजुए कातिल में है।" अमेरिका कहता है कि दोनों देश परमाणु-युक्त हैं। महोदय, अगर दोनों देश परमाणु-युक्त हैं तो क्या हम मरने से डरते हैं। अगर पाकिस्तान को हमारे परमाणु बमों का डर नहीं है तो हमें भी उनके परमाणु बमों का डर नहीं है। हम जान से ज्यादा देश की इज्जत को ऊपर रखना चाहते हैं। इसीलिए मैं सरकार से यह कहना चाहती हूं कि विपक्ष को कठघरे में खड़ा करने से बेहतर है कि वह अपने गिरेबान में झांके और विपक्ष को अपने विश्वास में लेकर रणनीति तय करे। क्योंकि अभी तक की आपकी रणनीति ने यह तय कर दिया है कि आप हर मोर्चे पर विफल हुए हैं। कारगिल के लिए आप अपनी पीठ ठोक रहे हैं। हमारे जवानों ने उसमें बहादुरी दिखाई है, आपकी तो सारी मशीनरी फेल हो गई थी, वहां पर बंकर बना लिए थे। हमारे जवान उन बर्फीली चट्टानों पर बिना बर्फ वाले जूते पहने हुए लड़ रहे थे, उनके पैर गल गए लेकिन आपने अभी तक कोई तैयारी नहीं की है। आपको तो मालूम ही नहीं था कि वे क्या कर रहे थे। ये तो रावड़ी देवी और सोनिया गांधी के पीछे पड़े हुए थे। आपके जो

डिफेंस मिनिस्टर हैं वह सोनिया गांधी को विदेशी साबित करने में लगे हुए थे और राबड़ी देवी को कुर्सी से हटाने में लगे हुए थे। आप जितना समय एक राष्ट्रीय नेता लालू प्रसाद यादव को बर्बाद करने में लगा रहे हैं ...(**व्यवधान**)... अगर इतनी ताकत और इतनी अक्ल आपने विदेशों के साथ लगाई होती तो आज देश का इतिहास कुछ और होता। ...(**व्यवधान**)... अरे, क्यों शर्म नहीं करते? ...(**व्यवधान**)... महोदय, इन्होंने ऐसी प्लानिंग की कि बेल होते ही जेल कर दिया ...(**व्यवधान**)... इतनी अक्ल अगर आपने सीमा पर लगाई होती तो आज कुछ और ही नजारा होता। पाकिस्तान समझ गया है कि आप नर्म हैं, आप केवल शब्दों के बड़बोलेपन के ही जादूगर हैं। आपके पास कुछ नहीं है इसलिए उसका दुस्साहस बढ़ता चला जा रहा है और इसीलिए आई.एस.आई. आपके यहां यह सब कर रहा है। वह कहता है कि आप सबूत दीजिए। पाकिस्तान कहता है कि आपने संसद पर अपने आप हमला करा दिया। बताइए, एक छोटे से देश की इतनी हिम्मत? वह आपसे कहता है कि आपने अपने सुरक्षाकर्मियों को खुद मरवा दिया। आपने खुद अपने ऊपर हमला कर दिया और आप समझते हैं कि आपने बहुत बड़ा तीर मार लिया। आप लड़ेंगे किसके दम पर? आपका सेनानी कठघरे में खड़ा है। दूसरी ओर आपके विदेश मंत्री जी हैं, वह सज्जन पुरुष हैं। वह पता नहीं कैसे अमेरिका के या और किसी के बहकावे में आ जाते हैं और उनको यह भी पता नहीं चलता है कि हमारे उनके संबंध कैसे हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तरांचल) : आप समझा दीजिए उन्हें। ...(**व्यवधान**)...

श्री रामदास अग्रवाल (राजस्थान) : क्या कह रही हैं ? इस देश के विदेश मंत्री किसी के बहकावे में आ गये हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती चन्द्रकला पांडे (पश्चिमी बंगाल) : जरा धैर्य से सुनिए। क्यों आप लोग बीच में बोल रहे हैं?

श्रीमती सरोज दुबे : मैं आज के दिन आपसे केवल इतना ही कहना चाहती हूं कि आज इंदिरा जी की याद आती है। आज जनता इंदिरा जी को याद कर रही है। अगर इंदिरा जी आज होतीं तो उसी रात उनके आतंकवादी शिविरों को नष्ट करके हमारी सेना वापिस आ जाती और अमेरिका हमसे समझौता कराने आता तो हम ऐहसान करके उनसे समझौता करते। ऐसा होता है नेतृत्व। यह नेतृत्व नहीं होता। कायरतापूर्ण नेतृत्व को कोई स्वीकार नहीं करता है। सेना भी तभी लड़ती है जब उसका नेतृत्व मजबूत होता है। इसीलिए मैं आपसे कहना चाहती हूं कि आप जरा सोचिए। यह राजनीति करने का समय नहीं है। यह शब्दों का जाल बिछाने का समय नहीं है। यह समय है पूरे देश की एकता और अखंडता को मजबूत रखने का। अगर देश है तो हम सब हैं। अगर देश नहीं है तो कुछ भी नहीं है इसीलिए विपक्ष को आप अपने विश्वास में लीजिए और सब लोग मिल-बैठकर एक रणनीति तैयार कीजिए ताकि दुबारा पाकिस्तान या किसी भी आतंकवादी की हमारे संसद भवन की तरफ या हमारे देश की तरफ निगाह उठाने की हिम्मत न हो। जो बढ़ते हुए हिंसा के हाथ हैं, उनको काटकर फैंक दीजिए और बहादुरी कीजिए। भ्रष्टाचार बंद करके जरा कुछ काम कीजिए और देश को आगे बढ़ाइए। इतिहास लिखा जा रहा है। जरा उस इतिहास में अपनी सुनहरी भूमिका तो दर्ज करा दीजिए। रोज आतंकवादी अपनी भूमिका दर्ज करा रहा है। आप इतिहास में कोई भूमिका दर्ज नहीं करा पा रहे। पन्ने काटने और जोड़ने में समय मत खराब कीजिए। सभापति महोदय, मैं एक बार फिर से सरकार से अनुरोध करना चाहती हूं कि विपक्ष एकजुट है और विपक्ष यह चाहता है कि आप सोच विचार कीजिए। इसीलिए विपक्ष ने कहा कि

एक सुविचारित नीति पर आपका साथ दिया जाएगा। अगर आप कुंए में गिरना चाहें तो कुछ नहीं किया जा सकता क्योंकि आपके विवेक पर हमें भरोसा नहीं है। इसीलिए विपक्ष की राय लेकर, सोच-विचार करके आप कदम उठाएं। देश के इतिहास की गरिमा के अनुकूल, देश का जो वीरोचित इतिहास है, देश का जो त्याग और बलिदान का इतिहास है, उसके आधार पर आप कदम उठाएं। इस देश की जनता देश की एकता-अखंडता को मजबूत करने के लिए कोई भी कुर्बानी देने के लिए तैयार है। जो आपका आका है, अमेरिका, उसकी तरफ देखना बंद कर दीजिए, उसके पैर आपने बहुत दिन तक पकड़ लिये। उसने आपको क्या दिया? कुछ नहीं दिया ...(व्यवधान)...अपने दम पर, अपनी ताकत पर, अपने बाहुबल पर आपको लड़ना है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार फिर ऊपर वाले से प्रार्थना करती हूं कि इनको सद्‌बुद्धि दे ताकि हमारा देश बच जाए और इस देश का नाम हो। धन्यवाद।

श्री गुलाम नबी आजाद (जम्मू और कश्मीर) : माननीय सभापति महोदय, 13 दिसम्बर की घटना ने एक दफा फिर हम सबको हिला दिया है जबकि हमारे देश पर और हमारे देश के लोकतंत्र पर एक गहरी चोट पाकिस्तान की तरफ से हुई है। पाकिस्तान की तरफ से हमारे पूरे डैमोक्रेटिक सिस्टम को खत्म करने का जो प्रयास हुआ, हमें खुशी है कि अल्लाह ने और हमारी सिक्योरिटी फोर्सिज ने तथा वॉच एंड वार्ड के जो साथी हैं, उनकी चौकसी ने एक बहुत बड़ी आफत से इस देश को बचाया है। मैं अपने साथियों से, चाहे वे विपक्ष के हों, पूरी तरह सहमत हूं कि यह वक्त एकता का है, यह वक्त विश्वास का है, यह वक्त इरादे बांटने का है और हिम्मत करने का है। चाहे हमारा धर्म कुछ भी हो, हमारी भाषाएं कुछ भी हों, हमारी पार्टियां भिन्न-भिन्न हों, हमारे विचार अलग हों लेकिन देश की एकता बनाए रखने के लिए, देश की अखंडता के लिए, देश की स्वतंत्रता को कायम रखने के लिए, चाहे सदन के इधर के लोग हों, चाहे उधर के लोग हों, हम हमेशा सब एक हैं। लेकिन जब हम इस गंभीर विषय पर चर्चा करते हैं और यदि अपोजिशन के कोई साथी बीच में सरकार का ध्यान कुछ चीजों की तरफ आकर्षित करना चाहते हैं तो इसका यह मतलब नहीं है कि वह सरकार को कमजोर करना चाहते हैं या सरकार के मनोबल को कमजोर करना चाहते हैं या सरकार के इरादों को कमजोर करना चाहता है। मैं समझता हूं कि लोकतंत्र में सबसे बड़ी शक्ति उसकी अपनी सरकार की नहीं होती है बल्कि अपोजिशन कितना उसको मजबूत रखे, कितना उसको टोज पर रखे, वह बड़ी शक्ति होती है। यह आपका सवाल नहीं है, जब हम 40-50 साल इधर थे, मैं मानता हूं कि अपोजिशन का जो रोल उन 40-50 बरसों में रहा, उससे सरकार कमजोर नहीं हुई, उससे सरकार मजबूत हुई। जो हमारी खामियां, त्रुटियां और कोताहियां थी उनको दुरुस्त करने का, उनको ठीक करने का हमें मौका मिला। मेरे ख्याल में सरकार को बजाए ओफेन्ड होने के इसको एक राइट पर्सपैक्टिव में लेना चाहिए। अगर सरकार सोने लगे तो अपोजिशन का काम एक पहरेदार की तरह उसको जगाने का है। हर वक्त अगर हम यह समझें कि बिल्कुल बात नहीं करेंगे तो डैमोक्रेसी का हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और दूसरे देशों में कोई फर्क नहीं रहेगा। हमारी शक्ति इसी में है, जब मुल्क कमजोर हो रहा है, मुल्क खतरे में हो उस वक्त इकट्ठे रहें लेकिन ऐसे वक्त में भी सरकार कुछ ऐसा बताए जो उनकी जानकारी में न हो। अगर सरकार रास्ते से भटक रही हो तो उसको पटरी पर लाने का काम अपोजिशन को करना चाहिए। यही मेरे कहने का मतलब है। हमें इस बात का अफसोस है कि पार्लियामेंट में ऐसी घटना हुई जिसमें हमारे सुरक्षा बलों व वाच एंड वार्ड के 9 लोगों की जानें चली गईं। लेकिन एक बात साफ जाहिर है कि हमारे सदन के दोनों सदनों में पिछले बारह सालों से कई दफा आतंकवाद पर चर्चा हुई लेकिन जितनी गंभीरता और जितना

जोश आज हर एक मैम्बर पार्लियामेंट के दिल में है उतना पहले कभी नहीं दिखा। पिछले बारह वर्षों से हम देख रहे हैं कि कश्मीर के अंदर करीब 60 हजार, औरतें, मर्द, बूढ़े, नौजवान, फौजी और सिटिजन्स मारे गए। जब हम बात करते थे तो लगता था कि इस तरफ कुछ नहीं होता है तो उसका अहसास नहीं होता था। अब जब घर के अंदर ऐसा हुआ तो सबकी आंखें और सबके कान खुल गए। डॉक्टर साहब और हम यहां ये बातें उठाते आए हैं। आप अंदाजा लगाएं कि कश्मीर के अंदर किस तरह हजारों लोग चाहे वे मुस्लिम हों या नॉन मुस्लिम हों, पंडित हों लाखों की तादाद में पिछले दस-ग्यारह साल से बेघर हैं और हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में भटक रहे हैं। इनमें से हजारों लोग तो आज मर भी गए हैं। मैं आपके सामने अपनी मिसाल रखता हूं। आपको आश्चर्य होगा कि बारह साल से मैं अपने घर नहीं जा पा रहा हूं। मैं अपने डिस्ट्रिक्ट में जाता हूं। डा. कर्ण सिंह को मालूम है कि मैं कहां रहता हूं। मैं डिस्ट्रिक्ट डोडा में रहता हूं। मैं डिस्ट्रिक्ट में जाता हूं लेकिन अपने घर नहीं जा सकता। क्योंकि वहां कई दफा अटैक हुआ है इसलिए घर में नहीं घुस सकते। अगर रात में रहें तो पता नहीं रात में क्या होगा क्योंकि आइसोलेटिड जगह है। चालीस-पचास आदमी आ जाएं तो इन दस सुरक्षा बलों का काम नहीं है। आप देख सकते हैं कि जिनका मनोबल यहां तक पहुंचने का है उनका मनोबल, उनकी शक्ति ऐसी आइसोलेटिड जगह के लिए कितनी होगी, इसकी चर्चा मैं कई दफा कर चुका हूं लेकिन वन हैज टू सी टू बिलीव। आज आप बिलीव कर सकते हैं क्योंकि आज आपने देखा है। जब हम बोलते थे तो शायद उनकी बातों पर कोई यकीन नहीं करता था कि ऐसा भी हो सकता है या होता होगा। मैं समझता हूं कि यह एक मौका है जब हमारी पार्लियामेंट और पार्लियामेंट के मैम्बर्स में एक नई जाग्रति आई है। आज इस बीमारी की जड़ तक जाने का सवाल है कि इस बीमारी को कैसे खत्म किया जाए। हम यह जानते हैं कि पाकिस्तान की ओर से यह चीज हो रही है लेकिन क्या कश्मीर के लोगों की उम्मीदें, उनकी अपेक्षाएं समझने की किसी ने कोशिश भी की? 1989 के बाद अगर किसी ने कोशिश की थी तो वह श्री राजीव गांधी जी ने 1990 में की थी। जब वी.पी.सिंह जी प्रधानमंत्री थे तो एक ऑल पार्टी डेलिगेशन - उस वक्त देवीलाल जी उप प्रधानमंत्री थे उनके नेतृत्व में एक डेलीगेशन ऑल पार्टी का गया था। राजीव गांधी जी भी उसमें थे। सौभाग्य से मुझे भी उस डेलीगेशन में जाने का मौका मिला था। तीन दिन और तीन रात उन्होंने वहां के ड्राइवर्स, कंडक्टर्स, दुकानदारों, वहां के लोगों को बुलवा-बुलवाकर, उठवाकर बस में, गाड़ी में और टैक्सी में गेस्ट हाउस से सैंटोर होटल तक लाए। उस वक्त की सरकार, जगमोहन जी ने उन्हें लोगों से मिलने के लिए बाहर जाने नहीं दिया था। इसलिए नहीं कि वे नहीं चाहते थे कि वे मिलें बल्कि सिक्योरिटी कारणों से नहीं जाने दिया था। उन्होंने पूरे शहर और सूबे के लोगों को बुलाकर प्रयास किया और उन्हें समझने की कोशिश की। पिछले दस साल में चाहे आपकी सरकार हो - बीच में एक वातावरण 1991 और 1996 के बीच बना था, एक वातावरण बनाया गया था। पोलिटिकल लेवल पर दूसरे लोगों से भी कुछ बात होती थी। यही वजह है कि आतंकवादियों के बगैर या उनसे समर्थन रखने वाले, सिम्पथी रखने वाले, हमदर्दी रखने वाले लोगों के बगैर भी दूसरे लोगों से बात होती थी। यही वजह थी कि 1996 में विधानसभा का इलेक्शन हो पाया। लेकिन इधर चाहे आपकी सरकार हो या बीच में दूसरी सरकारें हों मैं नहीं समझता हूं कि पीपल टू पीपल कांटेक्ट अब रहा है। आज दुर्भाग्य से जो कांटेक्ट है उसे देखकर ऐसा लगता है कि वह कश्मीरवादियों और केंद्रीय सरकार के बीच में ऑफीसर लेवल पर ज्यादा है। ऑफीसर लेवल पर ये बातें अजीज नहीं होतीं। 1989 में शुरुआत जम्मू कश्मीर लिब्रेशन फ्रंट से हुई। वह एक मॉड्रेट नौजवानों की, बेरोजगार नौजवानों की यूनियन थी। वे पाकिस्तान के हक में नहीं थे लेकिन

हिंदुस्तान के हक में भी नहीं थे। लेकिन दुर्भाग्य से मिलिट्री विंग हिज्बुल मुजाहिदीन, जो जमात-ए-इस्लामी का था उसने पाकिस्तान को बीच में लगा दिया। उस हिज्बुल मुजाहिदीन से सबसे बड़ा नुकसान हुआ। उन्होंने सबसे पहले जे.के.एल.एफ. (जम्मू-कश्मीर लिब्रेशन फ्रंट) के नौजवानों को खत्म किया। कइयों ने सरेंडर किया। हिज्बुल मुजाहिदीन के लोगों ने दोहरी पॉलिसी अपनाई कि खुद ही जे.के.एल.एफ.,जो प्रो पाकिस्तान नहीं है उनको खत्म किया जाए और फिर सरेंडर करके आर्मीज के साथ मिलकर जे.के.एल.एफ. के लोगों को पकड़वा दें, उन्हें खत्म करा दें। इस तरह से एक साजिश के तहत पाकिस्तान ने जमात-ए-इस्लामी का जो मिलिट्री विंग है हिज्बुल मुजाहिदीन, के द्वारा मॉड्रेट मिलिटेंट्स को खत्म कर दिया। इसी तरह से फिर उन्होंने तहरीक-ए-मुजाहिदीन और हरकत-उल मुजाहिदीन बना ली। तहरीके मुजाहिदीन का नाम जैश-ए-मोहम्मद रखा। जैश-ए-मोहम्मद का नाम होता है मोहम्मद की फौज और इसी तरह से हरकत-उल-मुजाहिदीन का नाम बदलकर लश्करे तोयबा, तोयबा का मतलब होता है पाक, एक उन्होंने पाक फौज बना दी। इस तरह से पाकिस्तान हर वक्त नाम बदल बदल कर, चेहरे बदल बदल कर हिन्दुस्तान को धोखा देता रहा, चिलमन के पीछे छुपकर, सामने आते भी नहीं और साफ दीखते भी नहीं। यह एक पाकिस्तान का रवैया पिछले 10-12 वर्षों से रहा है। लेकिन कल जब इस पर चर्चा हो रही थी तो अहलुवालिया जी और हमारे दूसरे साथी जब बोल रहे थे तो, ऐसा लग रहा था कि कोई इम्प्रेशन दिया जा रहा है। मैं यह नहीं कहता कि खुलकर, लेकिन दबी जबान में, विशेषकर सदन से बाहर, सदन में इतना नहीं लेकिन सदन के बाहर ऐसा इम्प्रेशन दिया जा रहा है कि जैसे अपोजीशन बिल्कुल कोई ऐक्शन नहीं चाहता, जैसे अपोजीशन चाहता है कि सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे, जैसे अपोजीशन चाहता है कि कोई काम ही नहीं किया जाए। मैं आपको बताना चाहता हूं कि अपोजीशन और कांग्रेस पार्टी ने हमेशा चाहा है कि सरकार सतर्क हो, मजबूत हो और सरकार इस बारे में जो निर्णय लेगी अपोजीशन हमेशा उसके साथ खड़ा रहेगा। लेकिन सरकार की हमेशा ढीलीढाली पालिसी रही है। चाहे वह बादामी बाग की घटना हो जिसकी चर्चा यहां पर हुई, चाहे श्रीनगर के कंटोन्मेंट की बात हो, जहां लेफ्टिनेंट जनरल बैठते है आतंकवादी वहां तक पहुंच गए थे, चाहे बीएसएफ के कश्मीर के हेडक्वार्टर पर आतंकवादियों के हमले की बात हो, चाहे सीआरएफ यूनिट पर हमले की बात हो, चाहे श्रीनगर शहर में टास्क फोर्स के हेड क्वार्टर पर आतंकवादियों के हमले की बात हो, चाहे पहलगांव में तीर्थ यात्रियों पर, जो वैष्णो देवी मंदिर की यात्रा पर जा रहे थे, उन पर हमले की बात हो, रेड फोर्ट पर हमले की बात हो, जम्मू रेलवे स्टेशन पर लोगों को मारने की बात हो और चाहे श्रीनगर में असेंबली पर हमले की बात हो, इन तमाम जगहों पर हमला होने के बाद भी इस गवर्नमेंट की पालिसी क्या रही? जब हिजबुल मुजाहिदीन ने यूनिलेटरल सीज फायर की बात की तो सबसे पहले गवर्नमेंट ने सोचा कि पता नहीं हमें क्या मिल गया है जैसे कोई सोने की खान मिल गई हो, बगैर कोई तैयारी किए होम मिनिस्टर के नेतृत्व में सब लोग वहां पहुंचे और एक बड़ी एम्बरेसमेंट गवर्नमेंट को हुई। मैं गवर्नमेंट की बात नहीं कर रहा हूं, मैं पूरे देश की बात कह रहा हूं। एक तरफ हिन्दुस्तान के होम सेक्रेटरी और एक बड़ा डेलीगेशन जा रहा हो और दूसरी तरफ नकाबपोश लोग बैठे हों, यह क्या है? इन्होंने उनको यह भी नहीं पूछा कि आप नकाब में आयेंगे या बगैर नकाब के आयेंगे और वह बात वहीं की वहीं खत्म हो गई।

सरकार की तरफ से पिछले रोजों में, रमजान के दिनों में यूनिलेटरल सीज फायर हुआ, फिर दूसरा यूनिलेटरल सीज फायर हुआ और फिर तीसरा यूनिलेटरल सीज फायर हुआ। उससे भी जो फौज के इरादे थे, वैसे इरादे उनके हमेशा मजबूत रहे हैं लेकिन मुझे लगता है कि

इन-ऐक्शन से, मिलिटेंटों के जो इरादे थे वह मजबूत हुए। उसके बाद कंधार और मेरे ख्याल में कंधार क्लाइमेक्स था इन सब चीजों के लिए। कंधार में जो आज जैश-ए-मोहम्मद के चीफ हैं, मौलाना अजहर मसूद और मुस्ताक लटरम, मुस्ताक लटरम ने मेरे ब्रदर-इन-ला को अगुवा किया था और सात महीने उनके साथ रहा था, लेकिन उसे जब हम लोगों ने कंधार पहुंचा दिया तो उनका मनोबल तो बढ़ना ही था। आज हम चाहे आर पार की बात करें या दूसरी बात करें, लेकिन मैं कहना चाहूंगा कि :

खुद ही अपनी दीवारों में तुमने किए हैं सुराख,

अब कोई झांक रहा है तो शिकायत कैसी ।

आपने खुद ही वक्त वक्त पर उनके सामने कमजोरियां दिखाई हैं, कमियां दिखाई हैं। आज जिस तरह से प्रधानमंत्री जी के स्टेटमेंट आ रहे हैं, आज जिस तरह से होम मिनिस्टर के स्टेटमेंट आ रहे हैं। अगर इस तरह दो साल से होते तो शायद पाकिस्तान और इन आतंकवादियों की हिम्मत नहीं होती जिस तरह से आज उनकी हिम्मत हुई है पार्लियामेंट तक पहुंचने के लिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सतीश प्रधान (महाराष्ट्र) : उस समय तो आप बोलने के लिए तैयार नहीं थे। ...(**व्यवधान**)...

श्री गुलाम नबी आज़ाद : किस समय की बात कर रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) : प्रधान जी, अभी मंत्रिमण्डल के विस्तार में समय है। ...(**व्यवधान**)...

श्री गुलाम नबी आज़ाद : उस वक्त भी और हमेशा कांग्रेस पार्टी देश के हित में, देश की एकता के लिए, देश की अखण्डता के लिए और देश की स्वतंत्रता को कायम रखने के लिए जो भी केन्द्रीय सरकार उचित समझे उसके लिए हमेशा रही है। अब मैं क्या कहूं, आप हिम्मत दिखाते नहीं। लेकिन हिम्मत का मतलब यह नहीं, जो भी काम करना होगा वह सोच समझ कर करें, हम यह नहीं कहते हैं कि जोश में होश खो दो। जोश में भी होश रख कर फैसला करना होगा। यह नहीं कि हम बिलकुल एकतरफा जाएं और उसके नेगेटिव और पोज़िटिव एस्पेक्ट को नहीं देखें। सरकार का यह काम है पोज़िटिव और नेगेटिव एक्सपेक्ट सब देखे और यह देखे कि इससे हमारे देश को क्या फायदा होता है, मुल्क को क्या फायदा होता है और यह भी जेहन में रखना होगा कि खाली एकतरफा नहीं चलना होगा। मेरा यही कहना होगा हमारे साथियों के लिए कि हमारे देश की मजबूती के लिए, अखण्डता के लिए, कांग्रेस पार्टी हमेशा देशभक्त है। जितनी कांग्रेस पार्टी ने कुर्बानियां दी हैं महात्मा गांधी से ले कर, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और बेअंत सिंह तक, जितना आतंकवाद का शिकार कांग्रेस पार्टी हुई है, मैं नहीं समझता कि कोई दूसरी पार्टी इतना शिकार हुई है। मैं यह भी नहीं चाहता, भगवान न करे कि कोई दूसरी पार्टी या उसका नेता इसका शिकार हो। लेकिन वास्तविकता यह रही है। उसके बावजूद भी हम चाहते हैं कि आप जो भी कदम उठाएं देश के हित में वह होश के साथ किया जाए, जोश में नहीं किया जाए। आखिर में मैं इन पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त करूंगा-

उंगलियां थाम कर गैरों की तुम चलोगे कब तक,

जिन्दगी खुद से बनती है, सहारों से नहीं ।

बहुत बहुत धन्यवाद ।

प्रधानमंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : सभापति जी, सब से पहले मैं आपको बधाई देना चाहता हूं। उस दिन बड़ी गम्भीर परिस्थिति पैदा हो गई थी। आतंकवादियों का निशाना था पार्लियामेंट, पार्लियामेंट में भी राज्य सभा के दरवाजे के सामने जो तांडव उन्होंने किया, उसका सफलतापूर्वक सामना हुआ। इसके लिए सुरक्षा बल, वाच एंड वार्ड हमारी बधाई के पात्र हैं। जो आतंकवादियों से लड़ते लड़ते शहीद हुए, उनको हम श्रद्धांजलि देते हैं। विधि का विधान है और शायद संसद् की रक्षा उस दिन इसलिए भी हुई कि दुनिया चाहती है, देश चाहता है कि हम आतंकवाद का दृढ़ता से मुकाबला करें और इस अवसर पर अपने सारे मतभेद भूल जाएं । इस देश की विशेषता है कि जब-जब संकट आता है, इस देश की एकता उजागर हो जाती है। मतभेद ताक पर रख दिए जाते हैं, विचार-भिन्नता एक ओर हो जाती है और सारा देश, सारा सदन आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर खड़ा हो जाता है।

जो चर्चा हुई है उसका उत्तर तो हमारे गृह मंत्री आडवाणी जी देंगे। मैं तो दो-तीन बातों का उल्लेख करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मुम्बई की जनसभा में मैंने कहा था कि आतंकवाद बढ़ रहा है। संसद भवन भी उसके निशाने पर आ सकता है। यह कोई भविष्यवाणी नहीं थी। आतंकवाद जब से आरंभ हुआ और जब से उसका विस्तार हुआ है तो दिल्ली में, नई दिल्ली में कौन से स्थान उसका निशाना बन सकते हैं, इस पर काफी चर्चा हुई थी। एक कमेटी भी बनी थी। उसने रिपोर्ट में कहा था कि जो निशाने हैं उनमें संसद भवन भी है। इसी के आधार पर मैंने मुम्बई की सभा में कहा था कि हमें सब तरह से तैयार होना चाहिए और अपनी सब संस्थाओं की सुरक्षा का ठीक तरह से प्रबंध करना चाहिए। कानून की आवश्यकता हो तो उसकी भी रचना करनी चाहिए, उसका भी मसौदा तैयार करना चाहिए।

दूसरे दिन जो कुछ हुआ, वह एक चुनौती है। भारत के गणतंत्र को चुनौती है। हमारी अस्मिता को चुनौती है। आतंकवाद गणतांत्रिक भारत के दरवाजे तक पहुंचकर खटखटाने लगा है। यह चिंता का विषय है और यह चुनौती का विषय भी है। पुराने इतिहास में मैं नहीं जाना चाहता हमने हमेशा इस बात का प्रयत्न किया है कि पड़ोस के साथ, पड़ोसी के साथ हमारे संबंध अच्छे हों। इसके लिए अलग-अलग कदम उठाए गए। आज वे कदम आलोचना का विषय बन गए हैं। लेकिन उनकी वजह से हमें एक अंतर्राष्ट्रीय समर्थन मिला था। अपनी विदेश यात्रा के दौरान जहां कहीं मैं गया, सबने इस बात की तारीफ की कि कारगिल के युद्ध के समय भारत ने बड़े संयम से काम लिया। फिर साथ में यह भी कहा कि अब और संयम से काम लीजिए। उस दिन जब राष्ट्रपति बुश का फोन आया, उन्होंने एकजुटता प्रकट की। आतंकवाद की निन्दा की और कहा कि सब देश इसकी निन्दा कर रहे हैं और जिनमें पाकिस्तान भी शामिल है। यह बहुत अच्छा निशान है, यह बहुत अच्छा चिन्ह है। मैंने उसी समय उनसे कहा था, राष्ट्रपति महोदय, शायद आपको मालूम नहीं है कि ये जो आतंकवादी हैं जिन्होंने संसद भवन के दरवाजे को खटखटाया है। हमें चुनौती दी है, ये आतंकवादी पाकिस्तान से जुड़े हुए हैं, पाकिस्तान द्वारा परिचालित हैं, पाकिस्तान द्वारा संचालित हैं, ये पाकिस्तान के इशारे पर काम कर रहे हैं। स्पष्ट शब्दों में यह बात हुई थी। अभी भी हम आशा करते हैं कि दुनिया में जो आतंकवाद के खिलाफ हैं वे एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बनाएं। अफगानिस्तान से आतंकवाद को समाप्त करने की अंतिम घड़ी आ रही है, तो और जगह, विशेष कर भारत में पड़ोसी द्वारा प्रेरित, संचालित व नियंत्रित जो आतंकवादी गतिविधियां चल रही हैं, उनकी ओर दुनिया अनदेखा कैसे कर सकती है? आतंकवाद को नापने के अलग-अलग गज नहीं हो सकते हैं, आतंकवाद को कसने के लिए अलग-अलग कसौटियां नहीं हो सकती हैं,

1.00 p.m.

आतंकवाद की समस्या को समग्रता में देखना होगा। पहले जम्मू-कश्मीर की विधान सभा के सामने विधान सभा को ध्वस्त करने के लिए कदम उठाए गए थे। जो आतंकवादी आए थे वे विधान सभा को तो नष्ट करना चाहते ही थे, बल्कि वे नेतृत्व को भी समाप्त करना चाहते थे। विधान सभा भवन में घूम-घूम कर वे फारुक अब्दुल्ला को नाम लेकर ढूंढ रहे थे, कहां हैं, कहां हैं, वे पहचानते नहीं थे। उनके मन में क्या था? 13 तारीख को जिन्होंने संसद् भवन को अपना निशाना बनाया उनके मन में क्या था? यह कोई मामूली आतंकवादी कार्यवाही नहीं है, इसके पीछे एक सोची-समझी योजना है और यह योजना उन आतंकवादियों ने नहीं बनाई, जिन्होंने मरने का फैसला करके यहां कदम बढ़ाया था बल्कि इसके पीछे कोई दिमाग काम कर रहा है। यह बात दुनिया को समझनी चाहिए, कूटनीतिक तरीकों से हम इसको समझाने की कोशिश कर रहे हैं। आतंकवाद कहीं भी, किसी भी रूप में मान्य नहीं हो सकता। उसके लिए सब को मिल कर, सारी दुनिया को एक राय बना कर आगे बढ़ना होगा। मैं विरोधी दल के नेता डा. मनमोहन सिंह जी को बधाई देना चाहता हूं और अन्य नेताओं को भी, जिन्होंने इस चर्चा में भाग लिया। चर्चा नकारात्मक नहीं थी, सकारात्मक थी। विधायक ढंग से चर्चा हुई, सदन की गरिमा के अनुकूल चर्चा हुई। कांग्रेस पार्टी प्रमुख विरोधी दल है। श्रीमती सोनिया गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने इस समय जो फैसला किया है वह देश के हित के लिए है, अपनी परंपरा के अनुकूल है। चालीस साल से पार्लियामेंट में मैंने ऐसे अवसर देखे हैं जब सीमा पर जंग हो रही है और पार्लियामेंट की बैठक हो रही है, उस समय सब ने इस तरफ ध्यान एकत्र किया कि उस जंग को किस तरह से जीता जाए। आरोप-प्रत्यारोपों के लिए उसमें कोई स्थान नहीं था। देश की एकता प्रकट हुई। आज भी यह एकता प्रकट हो रही है। संयोग की बात है कि उस दिन मैं राज्य सभा में आने वाला था, मेरा सवाल था, मगर अंतिम समय में मुझे मिलने के लिए एक संसद् सदस्य आ गए। कहने लगे कि आप हमारी बात सुनते जाइये, आप हमारी बात सुनते जाइये। अब रोकना मुश्किल। सुरक्षा के मामले में जब रोकना मुश्किल होता है तो मुझ से मिलने के बारे में कोई प्रतिबंध कैसे स्वीकार कर सकता है? मैं रुक गया। इसी बीच में यहां आतंकवादी कार्यवाहियां शुरू हो गयीं। उसी समय मुझे श्रीमती सोनिया गांधी का फोन आया कि आप कैसे हैं, आप कहां हैं? उन्हें चिंता थी। वह भी सदन में आई थीं और शायद बाद में चली गयी थीं ।

श्री गुलाम नबी आजाद : आकर चली गयी थीं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आई थीं, लोक सभा में उन की उपस्थिति थी। तो इस छोटी सी घटना ने मुझ पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला। विरोधी दल के नेता, विरोधी दल की नेत्री अगर प्रधान मंत्री की चिंता करें तो फिर भारतीय गणतंत्र के लिए कोई खतरा नहीं है, भारतीय गणतंत्र के लिए कोई संकट नहीं है। सभापति जी, ऐसे वक्त एक कसौटी बनकर आते हैं, हमारी परीक्षा लेते हैं। देश इस परीक्षा में सफल होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। हम ने बहुत संयम बरता है। अब संयम की पराकाष्ठा हो गयी है। लाहौर के बाद कारगिल, मैंने लाहौर जाने के पहले एक कविता लिखी थी, "जंग नहीं होने देंगे" और जंग हो गयी ।

श्री बालकवि बैरागी (मध्य प्रदेश) : पंडित जी, एक कविता और लिख दीजिए ताकि अगला फैसला भी हो ही जाये ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वह काम मैंने बैरागी जी के ऊपर छोड़ दिया है। मैं हर तरह की कविता नहीं लिख सकता।

सभापति महोदय, युद्ध को टालने के सारे प्रयत्न होने चाहिए। यह मैं केवल इसी संदर्भ में नहीं कह रहा हूं, एक व्यापक संदर्भ में कह रहा हूं। युद्ध के अलावा जितने विकल्प हैं, उन सब को खोजा जाना चाहिए, उन सब का सही मूल्यांकन होना चाहिए। जितने विकल्प हैं, उन की परीक्षा होनी चाहिए, विचार-विमर्श होना चाहिए। जो भी कदम उठाया जाएगा, वह सोच-समझकर उठाया जाएगा, यह मैं आप को आश्वासन देना चाहता हूं। अभी भी जो मित्र हमें संयम का उपदेश दे रहे हैं, हम उन से कहना चाहते हैं कि आप की भावनाओं की हम कद्र करते हैं। लेकिन भारत की जनता की भावनाओं को भी आप को ध्यान में रखना चाहिए। मैं लोकतंत्र का प्रधान मंत्री हूं, मैं किसी सेना का नायक नहीं हूं। मैं फौज के बल पर शासन नहीं कर रहा, मैं आप के समर्थन से कर रहा हूं, आप के सहयोग से कर रहा हूं, सौ करोड़ जनता की सद्भावना के बल पर कर रहा हूं। उस जनता की भावनाओं को भी हमें ध्यान में रखना होगा। मुझे विश्वास है कि इस संकट की घड़ी में से हम पार होंगे। इस संकट के दौरान जो कमियां ध्यान में आई हैं, उन सब को दूर करने का प्रयास होगा। ऐसी घटना फिर से न होनी पाए, इस की व्यवस्था करनी होगी और मुझे विश्वास है कि इस काम में सब दलों का सहयोग मिलेगा, सब पार्टियों की सहमति मिलेगी। देश में अगर कोई शांति के लिए बोलता है तो उस में आपत्ति की कोई बात नहीं है। हम देश में एक जुनून पैदा नहीं करना चाहते। देशभक्ति अलग है, राष्ट्र पर होने वाले हमलों का हम दृढ़ता से सामना करेंगे, यह अलग बात है, लेकिन देश में एक उन्माद पैदा करना हमारी मंशा नहीं है। विवेक के साथ देशभक्ति की तीव्र भावना जगाना, लोगों को संगठित करना, भारतीय समाज के सभी वर्गों में यह विश्वास पैदा करना कि वे सब सुरक्षित हैं और उन सबकी खुशहाली में ही देश की खुशहाली है - यह जरूरी है। इस देश में वे सुरक्षित हैं, उनका जीवन, उनका धन, उनका सम्मान सुरक्षित है। कभी कभी इस तरह के आरोप लगाए जाते हैं, जिन आरोपों का सचमुच कोई आधार नहीं है, अल्पसंख्यकों को डर है। क्यों डर है? क्यों डर होना चाहिए? भारत एक सेकुलर देश है। हमने सर्वपंथ समभाव में विश्वास लेकर आगे बढ़ने का फैसला किया है। हमारे संविधान में कोई मजहब के आधार पर या भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं है। अगर भेदभाव की शिकायत कहीं से आती है, तो उसके लिए अदालत हैं, अखबार हैं, मानवाधिकार आयोग है। हम तुलना करें जो कुछ स्थिति हमारे देश में है और हमारे पड़ौस में है। इसलिए राजनैतिक दृष्टि से ऐसी बातें न कही जाएं, जिनका हमारे शत्रु लाभ उठा सकते हैं या जो जनता के मनोबल को ठेस लगाती हैं। मैं समझता हूँ कि इस तरह की बातें नहीं कही जानी चाहिएं।

सभापति महोदय, जैसा मैंने आपसे कहा, चर्चा का उत्तर आडवाणी जी देंगे। आपने मुझे इस चर्चा में हस्तक्षेप करने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। धन्यवाद ।

PAPERS LAID ON THE TABLE (*Contd.*)

STUDY TOUR REPORTS OF THE COMMITTEE ON PUBLIC UNDERTAKINGS

SHRI B.P. SINGHAL (Uttar Pradesh): Sir, I beg to lay on the Table a copy each (in English and Hindi) of the Study Tour Reports of the